

विद्यापति गोष्ठी पुस्तिका प्रस्तुत करते हैं—

# कौ शि की

( एक )

सम्पादक : श्री० जगदीश मिश्र  
रवीन्द्रनाथ ठाकुर

प्रकाशक : विद्यापति गोष्ठी  
पुस्तिका

मूल्य : टाका मात्र

प्रकाशक :

विद्यापति गोष्ठी, पूरिया

१९७१-७२ केर हेतु

प्रकाशनक तिथि ४-१-७२

© सर्वाधिकार प्रकाशकालीन

सम्पादक :

प्रो० जगदीश मिश्र

( मान पृष्ठ १ से ४० धरिक )

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

( अवलोकक )

मुद्रक :

कालिका प्रेस, पटना-४

( आंतरण तथा पृष्ठ ४१ से अवलोकक )

विद्यापति गोष्ठी पूरियाक द्वितीय अधिवेशनक एक दृश्य



परिषद : बालाकांत यों प्रथम पंडित मे—श्री भुल्लोचर सिंह, पं० श्री राजमोहन ठाकुर, श्री सुमनर झा,  
प्राचार्य मदनमोहन मिश्र, श्रीसुतु ललित नापयण निज, श्री देवनाथ राज ।





पं० श्री अजमोहन ठाकुर, एम० ए० बी० एल०

कलकत्ता विश्वविद्यालयक

पोस्ट ग्रेजुएट कोसिलक भूतपूर्व सदस्य

## परिचायिका

क्रम १ : पूर्णियाँ सम्मेलन : पं० श्री सुभाषचन्द्र बोस

कोशीक प्रसिद्ध लोकक हृदय मे भारतक छलक से भाद  
मानन्द मे परिवर्तित नय गेल अछि । अरु मादुर-मधुर  
नय गेल अछि आ जहूर अभूत नय गेल अछि । सरिपहुँ  
पूर्णिया प्रणाम्य नय गेल अछि ।

क्रम २ : युग पुरुष विद्यापति : स्व० प्रो० रमानाथ झा :

पृष्ठ : २ से १० परि : विद्यापति भाषा कविये नहि, युग  
पुरुष छलाह । युग पुरुष ओ शीक जे अपन अन्तर्यामी अपन  
मुक्त भृष्टि करैत अछि । युग पुरुष, साहित्य, समाज,  
धर्म, राजनीति कोनहुँ सँ अग्रगण्य नहि रहि सकैत अछि ।  
युग पुरुषक प्रत्येक गुण केँ ई निबन्ध प्रतिचित्रित करैत  
अछि ।

क्रम ३ : पूर्णियाँ : कविता : डा० बदरी नारायण दास : पृ० १६

'पूर्णियाँ', कविता सँ बेसी पूर्णियाक एकसरेप्लेट थीक ।  
पूर्णियाँ सगस, एकटा सुन्दरतम चित्रक रूपमे देखल जा सकैत  
अछि । कोकाक जनमे हँसैत आस, बसत मे कपैत कदलीक  
गान, ओसक विन्दु सँ मौजस कर्मजक बंध, विसरवाक प्रफल  
करितो न विसरल जा सकैत ।

भानुक प्रगतिक दृष्टिये पूर्णिया सरिपहुँ 'समकुलन बन-  
फूल' थीक । प्रयोजन छीक एक एहन वातावरणक जे एहि  
फूल केँ समीचीन बिकासक अवसर बँक ।

क्रम ४ : विद्यापतिक देश भक्ति : निबन्ध : डा० जयकांत मिश्र :  
साहित्य अकादमी मे मैथिलीक प्रतिनिधि स्वल्प : पृ० २०  
सँ २२ परि : विद्यापतिकेर देश भक्त, हुनक मातृभूमि  
मिथिला । अपन थढ़ा आ भक्तिक कतेक संश मिथिला  
मैथिलीकेँ समित कयलन्हि, ताही विचार बिन्दुक पाक  
कातक वृत्त थीक ई निबन्ध । अपन प्रत्येक बिन्दु मे  
पूर्णता रखैत ।

क्रम ५ : प्राचीन मैथिलीक स्वरूप आशेर विद्यापति : निबन्ध :  
प्राचार्य राधाकृष्ण चौधरी : पृ० २३ सँ २६ परि :  
प्राचीन मैथिलीक स्वरूप केँ विभिन्न विद् से विभिन्न  
कैनिहार विद्यापति कयल लिखक छलाह । सामन्ती  
समाज मे रहितहुँ काव्य प्रतिभाक दुरुपयोग नहि कैनभि  
से हुनक विविष्टता थीक । विद्यापतिक माध्यम सँ मैथिली  
आ मैथिलीक माध्यम सँ विद्यापति जीवैत छथि ।

क्रम ६ : विद्यापतिक : काव्य मे पुरुष-परिकल्पना : निबन्ध :  
प्रो० बालगोविन्द झा व्यधित : पृ० ६० सँ ४० परि :  
पुरुषार्थ चतुष्टय की थीक ? की खाती लैकिक विनिश्चयता  
सँ कसो पूर्ण पुरुष भय सकैछ ? कोन कोन एहेन गुण  
अछि जे पुरुषत्व केँ उत्कर्ष बँत सकैछ ?

बातक मा नागरिक शिक्षा लेल लीखन विद्यापतिक  
"पुरुष-परिभा" पर आधारित होइती ई निबन्ध अपन  
स्वतंत्र अस्तित्व रखैत अछि ।

क्रम ७ : कसकता विश्वविद्यालय मे मैथिलीक स्थान कोना ?  
एक संस्मरण वार्ता : वार्ताकार : पं० श्री ब्रजमोहन  
ठाकुर : पृ० ४१ सँ ४२ परि : वास्तविक बलिदानक  
मूल्यांकन आवश्यक अछि । अन्त कर्तव्यनिष्ठ स्वमित  
प्रायुक्त प्रचार तँ सँ अलग रहबाक इच्छुक रहितो अलग नै  
रहि सकैछ । बारम्बार थीक आत्माक आन्ति । ताही आन्तिक  
मुन्नरित रूपमे ई संस्मरण वार्ता ।

क्रम ८ : पूर्णिया ओ मैथिली : एक गवेषणात्मक निबन्ध :

प्राचार्य मदनमोहन मिश्र : पृ० ४३ सँ ४६ परि ।

पूणियाक प्राचीन आ आर्वाचीन भौगोलिक स्थितिक  
सँ पूणियाक प्रशासकीय व्यवस्था मे मैथिलिक योगदानक  
परिणामस्वरूप पूणिया मे मैथिली आ मिथिलाक संस्कृति  
सुरक्षित रहल । भाइयो पूणिया मिथिलाकेँ अपन  
त्वन्दन सँ स्पन्दित क रहल अछि ।

सम्पादकीय

—श्री रवीन्द्र



## पूणिंयाँ वन्दना

लींअ पुरैनिया इसर प्रणाम ।  
उत्तरमे गिरिराज हिमाला  
बसल कोरमे जिनक नेपाला  
निकलल जाहिसँ सरिता माला  
जाहिसँ तोहर भूमि ललाम ॥

लींअ.....

दक्षिणमे जन-सारिणि गङ्गा  
त्रिविधताप भय-हारिणि गङ्गा  
पश्चिम कोशी पूष महामन्दा  
मिलि सभ जकरा बतवप धाम ॥

लींअ.....

कोशी कोष लुटावप जसय  
नहर सोनकत धतवप जसय  
धान पाट तोड़ी उपजावप  
कृषक मस्त जहँ भाठो पाम ॥

लींअ.....

माझुर मधुर जहर भमृत मेल  
रोग शोक सब दूर भागि गेल  
धन्य जीव जे पास पाविगेल  
पहन न सुम्बर कोनो ठाम ॥

लींअ.....

श्री शुभकर भग

## युगपुरुष विद्यापति

काव्यप्रज्ञागतमे विद्यापतिक महिमा अचरणीय अछि, अनुपम अछि । आइसँ छठो सय वर्ष पूर्व हुनक प्रादुर्भाव मध्य-मिथिलाक एक गोठ महापण्डितक वंशमे भेल जनिका लोक-निक बाबुरितक प्रभावसँ मिथिलाक जीवन अद्यापि नियमित अछि । हुनका उपजीव्य भेल छथिह अपन बाल-सखा शिवद सिंह जनिकहिटा मिथिलाक लोक हृदयसँ राजा कहलक । हुनकहि प्रमोदार्थ ओ गीत रचण लगलाह, नव रीतिसँ, नव तान ओ नव भासक, भट्ठार रससँ श्रोतप्रोक्त, ओहि भाषामे जे ओ स्वयं वज्रैत छलाह, जे मिथिलाक सकल नर-नारी वज्रैत छल । काव्यकलारससह हुनका अभिनव जयदेव कहलक; जनता हुनका कथिकण्ठहार कहए लागल । शरा शत शिवगीतमे ओ महादेवकेँ कतेक उपासभ सुनाओल, कतेक निन्दा कएल जे ठाम ठाम तीक्ष्णतामे कुमारसम्भवक घटुक निन्दोक्तिकेँ समेत मानु करैत अछि ओ घडि द्वारा ओ गार्हस्थ्य जीवनक आनुपूर्वी चित्र आँकल, गौरीक सन गृहिणीक अभिशापक लौकिक व्याख्या प्रस्तुत कएल । व्यवहारक गीतमे ओ तत्कालीन मिथिलाक सामाजिक चित्र प्रस्तुत कएल, सकल नर ओ नारीक हृदयमे सामाजिक चेतनाकेँ छापि गेलाह जे अद्यापि नहि मिटाएल अछि । ओ समस्कार ई जे विद्यापतिक रचनामे काव्यक प्रतिभा तथा संगीतक स्वरलहरीक अपूर्व सम्मिश्रण अछि जे प्रसाद ओ माधुर्य

द्वारे श्रोतप्रोक्त अछि ओ तेँ सर्वथा आनन्दक एकगोट अक्षय स्रोत भेल अछि । कोन आश्चर्य जे सम्पूर्ण जनजीवनक ई सुमधुर व्याख्या जपह पढ़ैत अछि, जपह सुनैत अछि तकरहि सुग्ध करैत रहल अछि । वस्तुतः विद्यापति हमरा लोकनिक काव्यक उपवनमे ओ कोकिल सिद्ध भेलाह जनिक काकली केवल मिथिलहिटामे नहि, समस्त उत्तर भारतक भाषाक्षेत्रमे वसन्त आनि देल ।

परन्तु विद्यापति कविप दा कहाँ छलाह; युव्या ओ कवि छलाहो नहि । तेहन विशिष्ट कुलमे हुनक प्रादुर्भाव भेल छल, तेहन वातावरणमे ओ पालित ओ पोषित भेल छलाह जतएक माटि ओ पानिमे विद्याक उत्कर्ष ओ राजनीतिक गहनता तथा जटिलता सानल छल, घसातक सङ्ग अधिभारत छल । जे कथा आन व्यक्ति उपयुक्त गुरु भेटला उत्तर तत्पर भेलहि कष्टसँ सीखि सकैत छल, बुझि सकैत छल, से विद्यापति शैशवावस्थहि सँ राजनीतिकल्लोलिनी कर्णधार अपन गुरुजनक मुहसँ, विधुत चिह्नदम्पणी लोकनिक सहवाससँ अनायास अवगत करए लागल होएताह । किशोरावस्थासँ लए अपन सुदीर्घ जीवनक अन्तिम दिन धरि ओ मिथिलाक राजसभाक खानदानी दरबारी रहलाह । जनिका प्रसङ्ग पखनहु प्रसाद सुनल जाइत अछि जे जनिक तुलनामे आओर सब राजा 'छोकड़ा' ताहि शिवद सिंहक ओ बालसखा, अन्तरङ्ग मित्र, विश्वस्त सेवक, अनुरक्त सविध तथा महाराज-पण्डित छलाह; अन्तिम संप्रामक मिमिस प्रस्थान करचासँ पूर्ण



ओ अपन छओ गोठ खाँके हुनकहि जिम्मा राखि गेल छलाह । मिथिलाक सकल नर ओ नारी इएह मानैत आवि रहल अछि जे महादेव हुनक भक्तिक वर्षाक भए उगना नाम धराए हुनक चाकर मेल छलथिन्ह तथा गंगाक तटपर प्राण स्वागति धारामे चलल अन्तिम राति धारस किछु दूर विधाम करैत हुनका मुक्ति देवाक निमित्त गंगा अपन धार छोड़ि हिनक आवासक निकट आवि बहए लागल छलथिन्ह । एहन अलौकिक छल हिनक व्यक्तित्व, एहन अनुपम छल हिनक प्रतिष्ठा, एहन अप्रतिम छल हिनक प्रतिभा ।

विद्यापति जनैत छलाह जे कीर्तिरक्षरसम्बद्धा ओ अपन हुहुगतभाव जे हिनक जीवनक दिशाकेँ नियमित करैत रहल ई इएह छिजैत छथि,

तिहुमन खेतहि काजि तसु कितिवलि पसरै ।

अक्षर कम्भास जसो मञ्जावाग्वि न देइ ॥

अत्यन्त किशोरावस्थाहिनी ई अपन कीर्तिवलिके पसरवाक हेतु अक्षरक आम्ह गाड़ि गाड़ि मञ्जान बान्धए लगलाह जे जीवनक अन्तिम समय भरि झलैत रहल । लिखवाक जेना हिनका ध्यान छलैन्हि ओ राजाधनीकीक प्रवासमे आओर नहि किछु तँ पओने छओ सपनेस पैव पैव ताड़क पात पर ई समस्त भागवत उतारि गेलाह । गीतकेँ छोड़ि दी तँओ हिनक रचना एक व्यस्त जीवनक हेतु पर्याप्त अछि । बस गोठ हिनक रचित ग्रन्थ एत उपलब्ध अछि जसहिमे पाँच गोठ

हिनक जीवनक अन्तिम बीस वर्षक कृति थिक, प्रायः सत्तरिसँ सव्वे वर्षक वार्धक्यमे संकलित जाहिमे एक एक पोथीमे सए सए उद्धरण अछि धर्म, पुराण, आगम ओ इतिहासही । कल्पना करवाक विषय थिक ओ ताहि हिस्सक समयमे जाअन पोथी तहिएत पर हाथहिटासँ लिखल उपलब्ध छलैक एतेक उद्धरण ई कोना दए सकलाह ? केहन छल हिनक लोकोत्तर सेवा, कतेक छल हिनका लिखवासँ प्रेम, केहन छल हिनक व्यावहारिक प्रज्ञा ओ केहन चमत्कारक छल हिनक विषय-ययन ?

अतएव विद्यापतिक कविक रूपसँ कत बड़ विशिष्ट छल हिनक व्यक्तित्वक स्वरूप जे अपन प्रतिभाक प्रसादसँ लोक आ शास्त्र बूढ़ विषयमे समान कृतित्व प्राप्त कएल, समान रूपसँ लोकोत्तर चमत्कार प्रदर्शित कएल ओ चिरकालक हेतु अमर छथि । वस्तुतः ओ जाही वस्तुकेँ छुनल तकरहि उत्कृष्टतर बनाए छोड़ल । ई छल हुनक प्रतिभाक विशिष्टता, प्राक्तन संस्कारक असाधारणता, व्यक्तित्वक प्रभाव । परन्तु ओ युनि एहन छल जखन मिथिला प्रतिभाक विकासक हेतु अत्यन्त उर्वर छल । विद्यापतिकेँ सघसँ प्रविचिशिष्टि मानि लिपेन्धि से भए सकैत अछि मुदा विद्यापतिक अतिरिक्तो एक दू नहि, अनेको महापुरुष ओहि युगमे एतए प्रादुर्भूत भेल छलाह जिनिक गुणगारिमासँ मिथिला एखन धरि गौरवाग्बिभ अछि । ओना तँ बारहम शताब्दीक आरम्भहिनी मिथिलामे सांस्क-



लिक उद्धान होअए लागल मुदा ओकर उत्कर्ष विद्यापतिक जीवनकालमे धरम पर परिलक्षित होइत अछि ओ विद्यापतिक परोक्ष होइतहि जेना ओकर हास होअए लागल । विद्यापतिक युग मिथिलाक इतिहासमे स्वर्णयुग सिद्ध भेल ।

मिथिलामे नवदुर्गक सूत्रपात शाके १०१६ मे मानल जाइत अछि जखन कर्णाटकक चंद्रामणि नान्यदेव सिमराओमे अपन राज्यक शिलान्यास कएल । ताहिनी पूर्व पीरपाणिक युगक कथा नहि हो, कलियुगमे मिथिलाक स्वतन्त्र राजा कहियो नहि भेल छलाह । कौटिल्यक अर्थशास्त्रसँ अद्वगत होइत अछि जे जनकक वंशधरकेँ कौनहु राजाक हेतु गाँहल अपराध कन्या पर सलात्कारक कारणेँ राज्यसँ ह्युत कए एतए विदेहक गण-राज्य स्थापित भए गेल जे क्रमशः लिच्छवीलोकनिक सङ्घ मिलि वृज्जिक संघराज्यक स्थापना कएल । इतिहासमे एहि संघक बड़नाम अछि कारण महात्मा बुद्ध अपन संघक निर्माण वृज्जिसंघक आदर्श पर कएने छलाह । जैनधर्मक प्रवर्तक महावीर वैदेह छलाह, वैदेहीपुत्र; मगधक सम्राट अजातशत्रु वैदेहीपुत्र छलाह । एए अजातशत्रु वृज्जिसंघक उच्छेद कए मिथिलाकेँ मगधक अधीन कएल । पंद्रह सए वर्ष सँ अधिक दित धरि मिथिलाक राजनीतिक स्वतन्त्रता अपहृत रहल । कतेक दिग्विजयी राजा मिथिलाक विजयक गौरव अपन अपन प्रशस्तिमे लिपिबद्ध कराए गेल छथि । मिथिला कहियो युद्ध नहि कएल,

राजनीतिक स्वतन्त्रताकेँ महत्व नहि देल; अपन आचार ओ विचार जीवनक क्रम ओ विचारक धारा स्वतन्त्र राखल । मुदा राजनीतिक स्वतन्त्रता नहि रहलेँ शान्ति ओ समृद्धि नहि रहए ओ शान्ति एवं समृद्धिसँ जे कलाक विकास चाही से होअए नहि पाओल । समुद्र ओ त्याग-एही वृन् युगक यहाँ मैथिललोकनि धर्मबुद्ध्या विद्याक व्यवसाय करथि ओ नीरस जीवन बितबैत अपन अस्तित्व धरि बचबैत रहलाह । अतएव शाके १०१६ मे जखन सुदूर कर्णाटक वीर ओ पवित्र नान्यदेव मिथिलामे राज्य स्थापित कएल तँ मिथिलाक लोक हुनका पूर्ण स्वागत कए राखल ओ आत्म-समर्पण कए देल । कर्णाट राजालोकनि चिदेशी होइतहुँ मिथिलाकेँ अपन प्रभु शोसन कए लगलाह ओ पंद्रह सए वर्षक अराजकतासँ थाकल मैथिल जाति अपन राजा ओ अपन राज्य पावि स्वतन्त्र ओ स्वच्छन्द भए विकासक पथ पर अग्रसर होअए लागल । नव जागरण जेना समस्त देशमे नवीन स्फूर्ति आनि देलक । लक्ष्मीधरक कल्पतरु सामाजिक जीवनक नवीन रूपरेखा अङ्कित कएलक जकर प्रभावसँ समस्त देशमे निरन्तरक युग कए सए वर्ष धरि व्याप्त रहल । गङ्गेशक नरुपन्याय समस्त देशमे शास्त्रीय विचारकेँ एक मोट नष्ट दिशा प्रदान कएलक । ई युग छल जखन विधर्मी मुसलमान भारतवर्षक विजय कए रहल छल ओ समस्त आर्यावर्त मुसलमानक शासनमे आबिओ गेल तथापि मिथिलामे कर्णाटक छत्रच्छायामे अपन राज्य रहल ।



विद्यापतिक प्रादुर्भावात् तीस आलीस वर्ष पूर्व मुसलमान मिथिलाक स्वतन्त्र राज्यके अपन शासनमे लय लेल परन्तु पतन ओकर शासन छल नहि सकलैक ओ जे मिथिला एतेक दिन क्षत्रियक शासनमे छल से ताव विशुद्ध मिथिलाक एक गोटे ब्राह्मणक हाथमे दए देल गेल यद्यपि ओ मुसलमानक अधीनता स्वीकार कए लेल, मुसलमान बादशाहकेँ कर देव स्वीकार कए लेल । ओइतिवारक राज्यकाल मिथिलाक इतिहासमे शर्षायुग कहल जाइत अछि जखन समस्त पूर्वोत्तर भारतक नेतृत्व मिथिला करैत रहल । १२०० ई०क प्रान्तमे जे नव जागरण मिथिलाक भूमि पर, नव शक्ति ओ नव प्रेरणा बनलक से बहुत दिन धरि प्रवर्धमान रहल । वास्तुतः विद्यापतिक परोक्ष भेलाक अव्यवहित उत्तर कालमे मैथिल सिद्धक समयमे मिथिलाक उत्कर्ष चरम पर छल ओ पक्षधर मिश्रक शिरोमणि रघुनाथसँ शास्त्रार्थमे पराजय मिथिलाक गौरव सूर्यक मध्याह्नोत्तर पतनोन्मुखता द्योतित करैत अछि ।

ओ विद्यापति एहि नव जागरणक सबसें विशिष्ट प्रतिभाकेँ प्रादुर्भूत भेल छलाह । मेधाक लोकोत्तर चमत्कारिता, कल्पनाक अद्भुत विलास, जीवनक प्रति घोर आस्था, कर्तव्यक प्रति अध्वान्त जागरकता, ई सब तँ दिनक जीवनक प्रत्येक अंशमे लक्षित करितहि छी मुदा विद्यापतिक प्रतिभाक बहुमुखिता एकर स्पष्ट प्रमाण अछि । मानव-जीवनक उद्देश्य जे विद्यापति अपन पुण्य-परीक्षामे प्रतिपादित

कएल अछि से धिक तँ हमरा लोकनिक संस्कृतिक सनातन मान्यता मुदा विद्यापति जाहि रूपमे ओकर निदर्शन कएल अछि ओ ताहसँ घेसी जाहि रूपमे ओकर पालन अपना जीवनमे कएल अछि ताहिसँ स्पष्ट अछि जे भारतीय आर्य संस्कृतिमे जीवनक मूल्याङ्कन जाहि सनातन मापदण्डसँ होइत आएल अछि तकरहि ओ नव युगमे नव परिस्थितिमे पुनरुद्घोषित कएल, पुनरुज्जीवित कएल, नवीन मान्यता प्रदान कएल । स्मरण रहए जे मिथिलामे जातीय जीवन, जन जीवन, सामाजिक जीवनक रूपरेखा जे विद्यापतिक युगमे नियमित भेल छल से सनातन होइतहुँ नवीन युगक अनुकूल छल, एतेक अनुकूल छल जे ओ केवल मिथिलहिमे नहि, समस्त आर्यावर्तमे आदरसँ समाहृत रहल ओ पूर्वोत्तर भारतमे तँ मैथिलक नेतृत्व सर्वमान्य रहल । आइ धरि हमर जीवन ओही भित्ति पर यथाकथञ्चित् अवलम्बित अछि ओ परिस्थितिमे अस्तरसँ ओहिमे समयानुकूल संशोधन, परिवर्तन ओ परिचर्जन नहि भेल अछि तहिँ समाज अस्तव्यस्त अछि तथा वैयक्तिक रूपसँ मैथिल लोकनि उन्नतिक शिखर पर कमशः पहुँचैत रहलाह अछि अवश्य परन्तु समष्टि रूपसँ मैथिल जाति पशुआएल, छिन्न भिन्न ओ नगण्य भेल अछि ।

विद्यापतिक युगमे समाजक पुनः संघटनक जे कमपल योजना बनि कार्यरूपमे परिणत कएल गेल जाहि प्रसादात् कमसँ कम तीन सय वर्ष धरि (१३००-१६००) ई समाज सुदृढ़



रहल एवं मुसलमान सदृश विधर्मी ओ विजाती विजेताक शासनमे अपन स्वरूपके ध्वजोने रहि सकल, ताहि संघटनक सभसे महत्वपूर्ण, सबसे विशेष स्थायी, सबसे विशेष दूर-दर्शितासे पूर्ण घटना छल लोकभाषाक महत्व स्थापित करब, लोकभाषाक स्वरूप निर्धारित करब, लोकभाषाक घर घरमे प्रचार करब, ओहि लोकभाषाक जे आपामार जनता ताहि दिन बजैत छल, बुझैत छल, जाहिमे मिथिला देशक वासी सकल मर ओ तारी, ब्राह्मणसँ भन्त्यज धरि, राजासँ रङ्ग धरि विद्वानसँ मूर्ख धरि समान रूपसँ भावत भए सकैत छलाह, जाहि बलें समाजक सब धामे एकत्र स्थापित भए सकैत छल, जकरा कारणें समस्त मिथिलावासी अपनाकेँ एक भूमि सकैत छलाह । ई विद्यापतिक प्रतिभाक प्रसाद छल, हुनक दूरदर्शिताक फल जाहिसँ मैथिलक जातीय जीवनक अभ्युदय होइत जे विद्यापतिक दृग्दर्शी नीतिक सर्वथा पालन होइत परन्तु से भेल नहि । विद्यापतिक परवर्ती युगमे जनभाषाक महत्व कर्मत गेल ओ जन साहित्य क्रमशः वर्गीय होइत गेल जकर परिणाम भेल जे गत शताब्दी धरि अवैत अवैत मैथिली साहित्य ब्राह्मण ओ कायस्थ भाषाक साहित्य बुझल जाए लागल । विद्यापतिक दूरदर्शिता न पहीन सुस्पष्ट अछि जे उओ सभ वर्ष पश्चात् पहि शताब्दीक प्रथम चरणक अन्त दिशि प्रथम महायुद्धक अनन्तर विश्वमे ई कथा सिद्धास्त रूपसँ मान्य भेल जे जातीय जीवनक आधार भाषा धिक ओ

भारतवर्षमे स्वातन्त्र्योत्तर कालमे भाषाधार प्रान्तक निर्माण दिशि ध्यान गेल । एखनहु जे हमरा लोकनि मैथिल जातिक गण्य करैत छी किंवा मिथिलाक निवासीमे जातीयताक किछुओ चेतना अछि तँ तकर श्रेय विद्यापतिकें, जे मिथिलाक जनभाषाकेँ स्वरूपायित कएल । आबहु जे मैथिलत्वक रक्षा भए सकैत अछि तँ मिथिलाक भाषाकेँ एकटा स्वरूप दए जकरा समस्त मिथिला देशवासी अपन भाषा बुझए, जकर गौरव सबकेँ होइक जकर विकासक हेतु, सम्मानक हेतु, पूर्णताक हेतु समस्त मिथिला निवासी कृतस्मकल्प हो, किछुओ स्वार्थत्याग करए, थोड़ो सेवा करैत रहबाक सतत सचेष्ट रहए ।

दोसर कथा अछि विद्याक प्रसङ्ग । मिथिला सब दिनसँ विद्याक व्यवसायमे संलग्न ओ विद्यापतिक युगमे समाजक पुनः संगठन भेल ताहिमे सामाजिक सत्ताक उप-चयक निमित्त अति विशुद्धि-ओ आचारक चाखक संग संग विद्याक व्यवसायकेँ मान्यता देल गेल जकर परिणाम-स्वरूप विद्यापतिक युगमे मिथिलामे प्रकाण्ड पाण्डित्यक खानि छल । विद्यापति स्वयं एकगोट पढ़न महाकुलमे जन्म लेने छलाह जाहिमे पाण्डित्यक प्रकर्ष प्रख्यात छल, विद्याक उपासनासँ राजनीतिक अधिकार पओने छलाह । मुदा विद्यापति विद्याकेँ उचितसँ अधिक महत्व नहि देल । मुख्यक लक्षणेमे पहिने वीरत्व, तखन सुबुद्धि ओ अन्तमे विद्याकेँ



राखि विद्युत्पापति विद्युत्पाकेँ व्यापक कपने प्रहण कपल अछि। विद्युत्पाक चौहद भेदक कथा कहि विद्युत्पापति ओहिमे शास्त्र ओ शास्त्र पढ़ी वू विद्युत्पाकेँ सुगमता हेत छथि मुदा साहमे पहुँत छथि जे स्वभावहिमे शास्त्रविधा शास्त्रविद्युत्पासँ छोट धिक कारण शास्त्रमे जेवन राष्ट्र सुरक्षित रहत तखनहि मे शास्त्रक चिन्ता चलि सकत । स्मरण रहए जे चीनी आक्रमणक पश्चात् भारतवर्षमे अस्त्रशिक्षा प्रत्येक स्नातकक हेतु आवश्यक प्रस्ताव भेल । विद्युत्पापतिक मनकेँ जे सामान्यता प्रदान कएल जाइत तँ मिथिलहिक किएक, भारतवर्षहुक इतिहास दोसर रूपक रहैत । एतैक दूरदर्शी राजनीतिज्ञ छलाह विद्युत्पापति, एतैक प्रवृत्त, एतैक प्रगतिवादी तथापि जे लोक हुनका स्वैर कहैत छथि, सामन्तवादी से अपन अनभिज्ञता प्रदर्शित करैत छथि । पुढारथक पढ़न एकान्त समयक, जानीयता कहू अथवा राष्ट्रीयता नकर मुक्तमनकेँ हृदयङ्गम कएने, समसं सुस्वर नीतिपर, सममानुसृत्य मार्गक अवलम्बन कए ओकरा कार्यमे परिणत करवात दृष्ट, भारतवर्षमे थोड़ कधि एहन भेल छथि । विद्युत्पापति केवल मेथिली नागरिक नहि, मेथिल राष्ट्रीयताक सेहो व्युत्पत्त्यर्थमे पिता शिकाह ।

विद्युत्पापतिक प्रवृत्त खेता, समाजक कल्याण भाषना गण प्रखर दूरदर्शिता हुनक स्त्री-शिक्षा सम्बन्धी नीतिमें आओर सुस्पष्ट होइत अछि । ई तँ आव सर्वमान्य अछि जे कोनहु समाजक सांस्कृतिक अवस्थाक मापदण्ड होइत अछि

ओहि समाजमे स्त्रीक स्थान । विद्युत्पापति-युगक महत्व ओहि युगमे स्त्रीगणक महत्तान्, हुनकालौकनिक समाजमे जे उच्च स्थान छल ताहिनिँ जाँचल जाए सकैत अछि । उदाहरणार्थ, स्त्रीधनक प्रचल मेथिल निश्चयकार लोकनि जे उदारता प्रदर्शित कएने छथि से भारतवर्षक शान कोनहु समाजमे नहि भेटत ओ ई निश्चयकार लोकनि विद्युत्पापति युगक देदीप्यमान विभूति छलाह । ओइनिवार घंशक महारानी लोकनि अने-कानेक कृतिमे अमर छथि । विश्वास देवी, धीरमती, लखिमा, अनुमति - अनेक नाम विद्युत्पापति, वाचस्पति, मिसक प्रभृति महापण्डितक ग्रन्थमे 'कारयित्री'क रूपमे वर्णित अछि । बङ्गालक सहजिया सम्प्रदायक अमल शिषसिंहक पट्टाभञ्ज लखिमा पर जे आरोप लगाओल जाए, मिथिलाक परम्परासे को परम विदुषी कवयित्री छल जाइत छथि । जण्डेश्वरक पत्नीक नाम सेहो ग्रन्थ लखिमा छलन्हि आ ओही विदुषी छलीह । विद्युत्पापतिक पुत्रवधु अन्तराला कवयित्री छलीह ओ शायतरङ्गिणीमे जे गीत लोचन उद्धृत कएल अछि से अम लो, चन्द्रकलाक नहि होइन्हि, हुनक नामो अन्तराला नहि होइन्हि, मुदा विद्युत्पापतिक पुत्रोद्गम रचने छलीह, विदुषी छलीह, ई कथा लोचनकेँ शान छलन्हि एहिमे विप्रतिपत्ति कोन ? विश्वासदेवीकेँ विद्युत्पापति "पश्यु सिंहासनस्थ" कहैत छथि; भारिधपुरक शिलालेखमे भैरवसिंहक पुत्रोद्गम रचनी अनुमतिकेँ "किञ्चोर्ष विनयाश्च धमनीनीना यया धान्यवाः" लखिमा शिषसिंहक हेतु पर्जन्यदादमे सती भेलीह परन्तु सती होण्य

नारीक उत्कर्ष छल असाधारण धर्म नहि । एहन नारी समा-  
जक समुचित शिक्षाक निमित्त विद्यापति "पुरुष परीक्षा"  
रचल "मुद्दे पौरस्त्रीणां" नागरी लोकनि संस्कृत साहित्य भक्तिय  
तनुपयुक्त भाषामे, सरल ओ स्पष्ट संस्कृतमे, रोचक तथा सबसं  
युक्त । ततवे नहि, विद्यापति ओहीदाम पौर-स्त्रीक विद्यापनमे  
कहेत छथि "मनमिज-कला कौतुक जुषाम्" अर्थात् जाहि  
नागरी लोकनिके काम-कला-विलासमे कुतूहल रहैत छन्हि ।  
एहि पत्रक व्यवहृतमे हमरा विद्यापतिक समस्त कविताक  
उद्देश्य स्पष्ट भेटि जाइत अछि, पुरुष परीक्षाहिक काम-कथा  
अथवा आनहु प्रसङ्गक शृङ्गार रसक कथाक नहि, प्रत्युत  
विद्यापतिक ओहि शतशः मैथिली गीतक जाहि प्रभावान्  
हुनक यश सर्वत्र भवलिअ अछि । सब प्रगतिशील युगमे  
काम शिक्षा समाजक हेतु कल्याणकर मानल गेल अछि ओ  
हमर संस्कृतमे तँ कामक स्थान जीयनक उद्देश्यमे धर्म ओ  
अर्थहिक सङ्ग अछि । जीवनक पूर्णताक हेतु कामक सुख  
आवश्यक । तँ ओकर उपेक्षा जीवनक पूर्णतामे बाधक होएत ।  
विद्यापतिन पक सय वर्ष पूर्वहिं पवित्रेण ज्योतिरीश्वर  
संस्कृतमे पञ्चसायक लिखल परन्तु ताहिसे केवल संस्कृत  
उपेक्षन भए सकैत छलाह । काव्य "व्यवहार चित्रे" थिक ओ  
तेँ काव्यक द्वारा काम-शिक्षा भारतीय काव्य-परम्परामे  
प्रशस्त अछि । महाकाव्यमे तँ रसिदर्शन आवश्यक मानल  
गेल अछि । धर-रस प्रधान महाकाव्यहुमे, किरातार्जुनीय

अथवा शिशुपालवध समेतमे, एक एक सर्ग विशुद्ध रति-वर्णन  
अछि, कामशास्त्रक आधार पर तथा एहि परम्पराक आरम्भ  
कालिदास अपन कुमार सङ्गर्षहिमे कएल, कारण, रघुवंशमे  
रतिवर्णनक सर्व नहि अछि तेँ आदिकाव्य रामायणहिमे से  
अछि दृग तँ मर्त्य छी जे जनभावामे शृङ्गारक गीतक रचना  
कएल कामशास्त्रक आधार पर ओहि विषयक भिन्न भिन्न  
अङ्गक सरल ओ सुबोध भाषामे वर्णन कए कए विद्यापति  
ओहि समाजक हेतु कामशास्त्रीय शिक्षाक प्रचार कएल, जाहि  
समाजकेँ संस्कृतक अभिज्ञता नहि छलिक ओ मिथिलामे नारी-  
समाजमे संस्कृतक अभिज्ञता नइ विरल नहि तँ परिमित, आयत्त  
सीमित छलक । से छाडि ओहि उत्कट शृङ्गारक गीत-  
रचनाक की उद्देश्य भए सकैत छैक जाहिमे सखी-शिक्षा, प्रथम  
मिन्त्र, विपरीत रति, मान ओ भिन्न भिन्न अभिसारक गीत  
अर्पित अछि । जेना संस्कारक गीत ओहि ओहि संस्कारक  
इतिकर्तव्यताक अवगति करबैत आएल अछि ओ नारी-समाजमे  
व्यवहार-विषय पटुता प्रदान करैत आएल अछि तहिना  
शृङ्गार-विषयक गीत रीति-सम्बन्धक भिन्न भिन्न भागक  
इतिकर्तव्यताक अवगति करबैत आएल अछि, नारी-समाजमे  
रति-विषयक पटुताक पाठ दैत आएल अछि । विद्यापति ई  
सब रचना मुख्यतः नारी-समाजक हेतु कएल, नारी-समाजमे ई  
गीत-सब आहायसी प्रचलित होएत रहल नारी समाजक कष्टमे  
आइ धरि अमर रहल अछि । ई गीत-सब पुरुष-समाजकेँ



"ग्रंथ" शतशतक हेतु नहि रत्नल गेल प्रयुक्त नगरीके नागरी, नु नागरी शतशतक लक्ष्य राखि रत्नल गेल "नागरिपति किन्तु कसया च हो" कहलहु बुझय सभाना ओ विद्यापति कहैत छथि जे तपहुके "नागरी सुगम सुख अमिअ मेला" । इगह सुपुत्र आ नागरिक अतन्त प्रेम प्रसङ्ग विद्यापतिक मीनक विषय-वस्तु थिक । एही नागरीके पुस्त परीक्षाक आदिमे मनसिजकलाकोतुकहुना कहल गेल अछि जकर शिक्षाक हेतु ओहि ग्रन्थक निर्माण भेल ।

अनन्य समाजक सुव्यवस्थाके सामूहिक जीवनक आधार मानैत जनकल्याणक हितक एकान्त कामना करैत, नदुरुप जीवनक पथ प्रशस्त करैत, विद्यापति मैथिल जातीय-ताक सूत्रपात करैत अपन सुदीर्घ जीवन चिन्ताओल परन्तु आरम्भहिसे ओ चरित्रफल पर जोर दैत रहलाह, चरित्रवन्दहिमे पुरुष पुरुष कहबाक योग्य होइत अछि अन्वया प्रत्ययाकार मात्र, पुच्छविहीन पशुमात्र थिक एकर उद्धोष करैत रहलाह, समाजमे यदि सय व्यक्ति अपन अपन चरित्र-घरके स्तरे पदमे भेल ते समाजक अग्रगुदय स्वत प्राप्त भय गेल ओ यस्तुतः पुरुष-परीक्षाक अनेकानेक कथासँ गही कथाक पुष्टि होइत अछि । गीतहुमे विद्यापतिक पुरुष नागरीक कामना करैत अछि, नागरी सुपुत्रक । जीवनक साफल्य ओ मानधि ओकर पूर्णतामे ओ तेँ केवल धर्म पर जोर नहि दैत छथि, अर्थ ओ कामकेँ ओ जीवनक पूर्णता ओ तेँ ओकर

साफल्यक हेतु आवश्यक दुर्भेन छथि । हँ, धर्मक विषयमे हुनक दृष्टिकोण उदार अछि, धर्मकेँ ओ जीवनक व्यवस्थित काम मानैत छथि तेँ अर्थ किंवा कामहु विषयक धर्म विरुद्ध आचरणकेँ प्रशंसित करैत रहैत छथि । परन्तु आश्चर्य लगेत अछि जखन देखैत छी जे पद पद पर विद्यापतिक युगमे समया-नुकूल साम्यताक विधान होइत रहल, नव नव आदर्श, नव नव साम्यतासँ समाजमे नव जीवनक क्रमक प्रचार होइत अछि मुदा ओकरा पूर्वक क्रमसँ उच्छिन्न कय नहि, पूर्वक क्रमकेँ आधार बनाय, जाहिसँ परम्परामे कोनो आघात नहि होइत अछि भय न नियमन एहन उपयुक्त होइत अछि जे लोककेँ ओकर पालनमे तेँ असीकर्य, तेँ ओकर पालनमे प्राचीन परम्परासँ विच्छेद, तेँ पूर्वजक प्रति अनास्था, तेँ मार्गक प्रगतिक मार्गमे अवरोध । कोन आश्चर्य जे आइ धरि ओ मर्यादा बधाकयअिन् अनुचरमान अछि ओ मैथिल जे मैथिल चीन्हल जारत छथ से नव ओही लक्षणसँ जाहि लक्षणक नियमन विद्यापति युगक महामनीषीगण कय गेल छथि ।

इपह छल ओ स्वर्ण-युग जाहिमे विद्यापति प्रादुर्भूत भेलाह ओ अपन प्रतिभासँ ओकरा अमर बनाय गेलाह । अत्यन्त खेदक विषय थिक जे हमरा लोकनि अपन इतिहास चिसरि गेल छी ओकर अवगति प्राप्त करबासँ विमुख छी । अपन इतिहासक उपेक्षा ओहि जातिक सांस्कृतिक ह्रास योनिन करैत अछि । इगह कारण थिक जे व्यक्तिगत रूपसँ हमरा लोकनि उन्नतिक शिफर पर पहुँचिनहुँ छी तथापि

समष्टि रूपे, सामाजिक दृष्टिसे, आर्थात् माधनमे हमरा लोकनि मगण्य छी । यदि हमालोकेनि अपन अनीतक दिशि स्पर्काक्ष होय, पाछाँ ताकयने आइयने होयत जे शके १०१० सँ लए प्रायः बारि सय वर्षे सँ ऊपर धरि शके १८१० धरि मिथिला सब दृष्टिसे समुन्नत छल प्रसुत छल, प्रगतिशील छल, ओ एहि स्वर्णयुगमे सयसँ प्रदीप्त, सयसँ प्रखर, सयसँ उत्तुंग प्रतिभा छल विद्यापतिक, समयक, देशक, समाजक ओ कुनक मर्यादाक पालन करैत ओ अनुभूत दूरदर्शितास सबजकेँ इत्ययनक पथ पर आर्गा लए जाइत रहलाह मुदा मिथिलाक दुर्भाग्य जे ओही समयमे मिथिलाक गौरव सूर्य अस्तोन्मुख भए गेल विद्यापतिक प्रदर्शित मार्गक महत्त्व लोककेँ कानि अतन्निहार होयल लगलक । आय जगत विद्यापतिक महिमा पुनः लोक बुझए लागल अछि, तखन विद्यापतिक पुनर्मुद्रण होयबाक खाती, हुनक उदात्त आदर्श स्थापित होयबाक खाती, हुनक व्यक्तित्वक वास्तविकता जे कालजन्म एकदा जाल अकाँ पसरि हुनक स्वरूपकेँ विन्दए नहि देन अछि तकरा हृदयक खाती । से जे करए लागय त ओहि युगकेँ परिचय प्राप्त करए पड़त । ई एतेक सुगम काज नहि अछि । एहि हेतु एक दल उत्साही नवयुवक विज्ञान जिक ओ मोहन लागति तखनि ओकर उद्धार भए सकैत अछि मुदा से संबंध विधेय भिक ओ से जलन होयत तखन हमरा लोकनि अपन आर्थात् गौरव नीति सकय आ तखनि विद्यापतिक महिमा चान्हि सकयैह ।

श्री रामनाथ झा

## पूणियाँ

पूछ नहि हमरा सँ जे काँ नाम छी ।

कोशी गाबि रहल हमरे जय गंग अछि,  
गंग जनइत हमरा हृदयक प्रीत अछि,  
भीर महानदाक घिमल जलधारमे  
प्रतिध्वित सन हमर चिराट अतीत अछि ।

रोपि रहल जे धान मिट्टि कए खेतमे  
ओहि किसान-कन्याक ललाटक घाम छी ।

हम निर्जनमे अधकुलैल पतकूल छी ।

शश-श्याम छी, माडिक रस सँ रनात छी ।  
कोका-वनमे मुसकाइत मधु-प्रात छी ।  
जइ पर किछु-किछु बदल जवानीक रंग छइ  
से बसातसँ कपडत कदली-प्रात छी ।

कोबामे भ' गेल मधुर से भूल छी ।

हम निर्जनमे अधकुलैल पतकूल छी ।

ओसविदुलँ भीजल कमलक गंध हम ।

अमा-दीप छी, पूणिमाक अभिसार छी ।  
मासुरन आणल दधि-माछक भार छी ।  
जन्मभूमिकेँ छोड़ि एला परदेश-जे  
हुनकर प्राणप्रियाक स्वेप्न साकार छी ।

विद्यापतिक कलमसँ उमरल छंद हम ।

ओसविदुलँ भीजल कमलक गंध हम ।

—छा० जदरीनाथायण दास



## विद्यापतिक देशभक्ति

महाकवि विद्यापतिक सम्बन्धमे बहुतो महत्त्वपूर्ण विषय सभ अन्वेषण कएल गेल अछि ओ कएल जा रहल अछि तथा बहुतो रूपसँ हुनक प्रतिभा ओ महत्त्व पर प्रकाश देल गेल अछि । किन्तु हमरा जनैत जे साधारण सँ साधारण जनताकेँ सिखावा योग्य हुनका जीवन ओ कृति सँ उपदेश छँक से छँक हुनक मातृभूमि मिथिलाक भक्ति ।

हुनक जनैक कृति अछि ताहिमे स्थान स्थान पर ओ एएह निवेदन करैत छथि जे ओ मैथिल छथि, मिथिलाक बहु मर्यादा छल तथा अद्वयाध्वनि परांमान छल, हुनका ओकर भाषा ओ इतिहाससँ बहु स्नेह छन्हि । सभसँ पहिने एएह तथ्य पर विचार कर जे ओ साहित्यक रचना करब आरम्भ कएलन्हि तखन स्पष्ट घोषणा कएलन्हि जे मरहटल ओ प्रकृत सँ घेरी "सब जन मिट्ठा" हुनक "मैथिल बनता" छन्हि तँ ओहीमे अपन साहित्यिक रचना ओ करब मिश्रण कएलन्हि । ततवे नहि ओ बारम्बार मिथिलाक राजा लोकनिक नाम छैत अपना काव्य सभक रचना कएलन्हि । एतय धरि जे कीर्तिलता, कीर्तिपताका तथा पुरुषपरीक्षामे धर तत्र मिथिलाक इतिहासकेँ प्रधानता देलन्हि ।

पुरुषपरीक्षामे कवि लिखैत छथि—“अहो तीरभुक्कीया! स्वभावात्तु गुणगर्षिणो भवन्ति” । अवश्य ई मैथिलक विशेष

२१ ]

स्वभाव छल से ओ बुझैत छलाह जे गुणी भेलें मैथिल ककरो मनुक्ख नहि कहैत छथि । कीर्तिपताकामे सेहो पहिना गौरवोक्ति कविक अछि । ओ कहैत छथि—“तिरहुति मज्जादा बहि रहिअ” ।

विद्यापतिक पद जे सभसँ अधिक सफल भेल तकर नाम मिथिले देशक नामे “तिरहुति” नाम प्रसिद्ध भेल । ई विषय की हुनक देशभक्तिक परिचायक कम अछि ?

शाक्त युगमे मैथिलीक अभ्युत्थान करबाक काल हमरा सभक कर्त्तव्य भय जाइछ जे हुनक पहि देशभक्तिक स्मरण करी तथा ताही कवेँ मातृभूमि मिथिला वा तिरहुत केर भक्त बनी, ओकर इतिहास, भाषा ओ गुण केर गौरव राखी एवं जाहिसँ ओहि महापुरुष द्वारा उठाओल “देखिल बधना” “सबजन मिट्ठा” भेल अछि तकरा सार्थक करी ।

ई हर्षक विषय थिक जे हमरा लोकनि हुनक “जय-जय भैरवि असुर मयादनि” नामक दुर्गाक स्तुतिकेँ मैथिली-भक्तिक प्रतीक बनाय सभ सभा सोसाइटीक आरम्भमे गवैत छी तथा छठि कए ठाढ़ भए ओहि भक्ति-गीतकेँ अपन प्राक्तक “राधगीत” युक्ति सम्मान प्रदान करैत छी । सन् १९६३ ई०मे दिल्लीमे जखन मैथिली पुस्तक प्रदर्शनीक उद्घाटन पछित जमाहिरलाल कएलन्हि तखन ओहो पहि गीतकेँ मिथिला चन्द्रना युक्ति छठि ठाढ़ भए सभक संग सम्मान प्रदान कएलन्हि । सोसाइतिक गीत गायि प्रत्येक शुभ कार्य मिथिलामे

प्रारम्भ कपल जाइछ ई तँ प्राचीन परम्परा धिक तथा तकरे  
पालन हम सब एहि हवे करैत छी । कवि जखन दुगाके  
कहेत छथि :-

“विद्यापति कवि तुम पद सिवक

पुत्र विसरु जनु माता ॥” तखन बुझि

गईत अछि जे हमरा सभक दिविसर कवि मातृभूमि  
मिथिलाके कहि रहल छथि जे “ई माता हमरा जनि  
दिसरु ॥” आशा अछि विद्यापति जयन्तीक पुर्नीत पर्वक  
अधर पर समवेत सब केओ मातृभूमित इष्ट आशीर्वाद  
माकि हुनके सेवा करैत भाग्य बढ़व ।

ॐ नमो जयजगन्नाथ विनश्चर

## प्राचीन मैथिलीक स्वरूप आओर विद्यापति

प्राचीन भाषा मध्य मैथिलीक अल्पत एकटा चिह्नित  
स्थान छैक । मिथिलाक भौगोलिक क्षेत्रक अन्तर्गत रह-  
तिहार मानव मोनक मनोभाषके व्यक्त करबाक क्षमता जाहि  
भाषाके छैक सोह मैथिलीक भाषाक नामसँ चिन्त्यत भेल  
अछि । समस्त प्राग्तीय भाषाक मध्य मैथिलीक स्थान  
अग्रगण्य अछि । जाहि समयमे प्राग्तीय भाषा सर्वाधिक  
विकासो नहि भेल छल, ताहिमे पूर्वजिसँ मैथिलीमे साहित्य  
सृजनक प्रारंभ नञ्चुफल छल आर भोकर अनेकामेक प्रमाण  
हमरा लोकनिक समक्ष अद्युत्पन्न अछि । मिथिला अति प्राचीन  
कालसँ सस्कृत अध्ययन अध्यापनक प्रधान केन्द्र छल आर  
प्राचीन सस्कृत साहित्यमे मैथिली शब्दक प्रयोग अदि बातक  
सङ्गत अछि जे ओ लोकनि अपन भाषाक अचहेलना नञ्  
कपने छलाह । भाषाक प्रचलित परिपाटीसँ ओ लोकनि  
कथमपि अनासिह नञ् छलाह । संस्कृत प्राकृत अपभ्रंशक  
पछाति मैथिलीमे छल ओहना भाषा अछि जे सर्वप्रथम  
साहित्यिक भाषाक रूपमे ग्रहण कैल गेल आर एखनहु एकर  
प्रभाव समस्त पूर्वी भाषा पर देखल जाइछ । अपन सांस्कृतिक  
एवं साहित्यिक परम्पराक चरममे एकर स्वतंत्र स्तित्य  
सुरक्षित रहल जहाँ नवम् शतम् शताब्दीमे संस्कृत मध्य



मध्य मैथिली शब्दक व्यवहार भेदात् अलि सहां तेरहम चौदहम शताब्दी मध्य मैथिलीमे परिभाषित गद्यक उदाहरण सेहो ।

पष्ठम शताब्दीसँ दशम शताब्दी धरि जे पूर्वी भारत मे प्राकृतक अपभ्रंश रूपक प्रचार प्रसार भेल सकर परिणति भेल प्रांतीय भाषाक उत्पत्ति आ विकासमे । प्रांतीय भाषाक विकसित भेला उत्तरो अपभ्रंशमे साहित्यक रचना होइने रहल आर एकर प्रमाण हमरा मिथिलाहुमे भेटइत अछि । अपभ्रंशक कयि लोकनि प्रत्यक्ष अनुभूत एवं लौकिक जीवनसँ सम्बन्धित घटनाक वर्णन करइत छलाह आर हुनका लोकनिक काव्यमे आम्य-जीवनक विशेष महत्व छल । उद्योतिरीश्वर ठाकुर कैकटा भाषाक वर्णन कएने छथि जाहिमे 'अवहट्ट' क उल्लेख सेहो अछि । विद्यापति मैथिलीक 'अवहट्ट' आर 'देसिल बचना' कहने छथि । कीर्तिलताक भाषाकेँ चौदहम शताब्दीक मैथिली अपभ्रंश कहल गेल अछि जे संस्कृत-प्राकृतसँ भिन्न अछि मैथिलीकेँ पूर्वी अपभ्रंशक अवदान सेहो कहल गेल अछि । अपभ्रंश मिथिलामे अवहट्टक नामसँ सेहो प्रचलित छल । कीर्तिलता, कीर्तिपताका, प्राकृत नैगलम् आदि ग्रंथ केँ अपभ्रंशक ग्रंथ मानल गेल अछि । पश्चिमी प्रान्तमे जे विंगलक नामसँ प्रख्यात छल सँह पूर्वी प्रान्त मे अवहट्ट मैथिलीक नामसँ विख्यात भेल प्राकृत नैगलम्क टीकाकार वंशीधर विंगलकेँ अवहट्टक एक रूप मानैत छथि । अपभ्रंश में महा-

काव्यक परम्परा छल आर एकर प्रणेता छलाह महाकवि श्वर्यम् जे 'पञ्चम चरित' क रचयिता छलाह । 'पञ्चम चरित' आर विद्यापतिक भाषामे साम्य देखबा मे अवहट्ट । लोकन विद्यापतिकेँ मैथिली अपभ्रंशक अनुभा कहने छथि आर उज्ज्व विद्यार महामहोपाध्याय मुकुन्द का यक्षसीक सेहो छन्हि । मैथिली अपभ्रंशक प्राञ्जल परम्परा अनि प्राचीनकालसँ अवश्य रहल होइत किन्तु तँ हम देखइत छी जे विद्यापति अपन उपहासक प्रसंगमे निम्न-लिखित वाक्यसँ ओकर उत्तर दइत छथि—

“बालघन विजयाधर भासा  
बुहु नहि लग्गइ बुज्जन हासा  
ओ परमेस्वर हर सिर सोहर  
ई जिखय नाअर मन मोहर”—

मैथिलीक प्राचीन रूपसँ हमरा लोकनिकेँ बिदाचार्यक रचनामे साक्षात्कार होइत अछि आर संगहि तत्कालीन संस्कृत साहित्यमे मैथिली शब्दक प्रयोगसँ सेहो ( जेना-वाचस्पति मिश्र आर सूर्यानन्दक रचना सभमे ) । अपन मुकुमारता, प्राचीनता एवं साधुर्यक प्रतापेँ मैथिली दिनानुदिन पौरवाचित होइत गेल आर एका पर एक प्रान्तमे पसरइत गेल । बंगला आर असमिया में कौनो प्रकारेँ मैथिलीमे उद्भूत नहिये में सकइये । कतेको असमक विद्वान लोकनि असमिया केँ मैथिलीक अंग मानैत छथि । अर्थात्पि मे

आठो कारक जाहि रूपे प्रयुक्त भेल अछि टाँक ओहि रूपे हम ओकर प्रयोग विद्यापतिमे देखबत छी आर ओहु आधार पर हम मैथिलीक प्राचीनताक स्वरूप विशिष्टक सकल छी । तेरहम शताब्दीक सिद्ध कवि विनयार्थक पद्यक समग्र तत्कालीन मैथिलीसँ स्पष्ट अछि । सिद्ध कविक भाषा आर वर्णान्न रचनाकरक भाषामे जे साम्य अछि ताहुनँ रूपे कहल जा सकल अछि जे भाषाक रूपे मैथिलीक विकास ओहिसेँ बिहू शताब्दी पूर्वहि भेल होइत । कथाक शासक नान्यदेवक पुत्र मल्लदेवक एक मैथिली काव्यक संकलन स्वर्गीय शिवपूजन सहायजी कएने छथि आर जे अहि काव्यकेँ मल्लदेवक काव्य मानिलेल जाए तँ सिध्दार्थ-रूपे कहल जा सकल जे बारहम शताब्दीमे मैथिली काव्य पूर्णता प्राप्त क चुकल छल । हम स्वयं अहि मल्लदेवकेँ नान्यदेवक पुत्र मनइत छी कारण अहिठाम अनितामे कृप मल्लदेव अछि आर अहि नामसँ ओ भौट गगयानपुर अभिलेखमे सेहो सम्बोधित केल गेल छथि । प्राकृत पैगलमे सेहो मैथिलीक विशिष्ट काव्य उपलब्ध अछि आर ओहिमे तान-चारि सौ एहेन मैथिली शब्द अछि जकर व्यवहार अनुत्तम अछि । मैथिलीक मुक्तक पद एवं छन्द ग्रन्थक दृष्टिकोणसँ ई एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ अछि । पारिजातहरण नाटकमे यद्यपि संस्कृत-प्राकृतक व्यवहार भेल अछि तथापि ओहिमे मैथिलीमे जे गीत अछि से मैथिलीक प्राचीनताक परिचायक कहल जा-

सकल अछि । ओहि गीत मयमे उपमा-उपमेयक समन्वय अपूर्व अछि ।

बारहम शताब्दी क 'उक्ति व्यक्ति प्रवक्तराग' मे तत्कालीन भाषा शब्दक जे प्रयोग देखबामे अवश्य ताहुनँ ई स्पष्ट रूप हाइछ जे मैथिली शब्दावली काफी विकसित भ चुकल छल । वर्णान्नरत्नाकरसँ तत्कालीन काव्यरुदि एवं काव्यकपी मान होइछ । वर्णान्नरत्नाकर एवं कीर्तिलतामे तत्सम शब्दक प्रयोग देखबामे अवश्य । विद्यापति पद्यमे अपभ्रंशक तद्वत आर गद्यमे तत्समक प्रयोग करइत छथि । पदावलामे तत्सम शब्दक प्रयोग प्रचुर मात्रामे भेल अछि । विद्यापति लोकभाषा एवं अपभ्रंश दुहुमे रचना केलन्हि आर ताक लीम प्रचलित पद्यनिकेँ अपनीलन्हि । कीर्तिलतामे ओ अपभ्रंशक प्रचलित परम्पराक निर्वाह केलन्हि मुदा भाषामे ओ एहेन परिष्कृत रूपक परिचय केलन्हि जकर दोसर उदाहरण भेटव असम्भव । हुनक अवहट्ट रचना समष्टिक मध्य सेहो मैथिलीक समिश्रण देखबामे अवश्य । मैथिली स्वर विन्यास एवं वर्ण विन्यासक प्रभाव सँ सहजहि स्पष्ट अछि । प्राकृत पैगलक रचयिता एवं विद्यापतिक प्रयाससँ अपभ्रंश देखल यचनाक स्तर पर उतरबेटा नहि केल अपितु लोक प्रवाहसँ अभिगित भए एक नवीन भाषाक जन्म देलक जाहिसँ जतमानस भान्दोरिल भए उठल । उयोतिरीश्वर आर विद्यापतिक योगदान अहिमे अपूर्व कहल जैत ।



सुदीर्घ सांस्कृतिक परम्पराक फलें मैथिलीक सुव्यवस्थित रूपें विकास भेल आर ओहि मैथिली केँ विद्यापतिक भाषा समस्कृत कपड़ेलक। पुरन्धर विद्वान रहितहुँ ओ छलाह मात्र एक उत्कृष्ट कवि जिनक उपमा आर भर्त्सकार कविकेँ सह-जहि आत्मसात्क क' लइत अछि। सामन्ती समाजमे रहितहुँ ओ अपन काव्य प्रतिभाक दुरुपयोग नहि केलन्हि आर इच्छा अछि हुनक सर्वश्रेष्ठ विशिष्टता। अपन चमत्कारिक ढंगसँ विवेचाक क्रममे ओ जे काव्य लिखलन्हि ताहिमे भर्त्सकारक प्रचुर मात्रामे प्रयोग भेल अछि। कविता केँ सजेयामे ओ जेनेक मजेष्ट एवं मजम छथि तनेक जान नहि। जन मानसक कष्टहार बनि विद्यापति एहेन साहित्यिक परम्पराक जन्म देलन्हि जे अनुसूचन जीवित अछि आर हमरा लोकनिकेँ अनु-प्राणित कए रहल अछि।

सामन्तवादी व्यवस्थामे रहितहुँ ओ नवीन जन-जागरणक कवि छलाह। दरबारमे रहितहुँ एवं राजनैतिक संक्रमण कालक धक्केँ आघेष्टित होइतहुँ ओ शुद्ध रूपेँ एक जन कवि छलाह जे राधाकृष्ण एवं शिषक माध्यमसँ सामान्य जनताक दुःख सुखक चित्रण केलन्हि। सामाजिक यथार्थसँ ओ कहियो कन्ती नहि कटीलन्हि अपितु ओ ओहि तथ्यकेँ चुभलन्हि आर तदनुषंग काज केलन्हि। लोकतन्त्रक परिग्रहण कए महाकवि विद्यापति लोक चेतनाक प्रतिनिधिरूप केलन्हि। जँ से नहि ओ केने रहितथि तँ लोक कोना हुनका अपना कण्ठमे स्मरण

करत रहइत आर उभैह लोककंड भुनका हमरा ओहि महा-कविक गीत झेलक जाहि पर मात्र हम मैथिलदा नहि धरन् समस्त साहित्य प्रेमी हयिन छी। ओहि जन-मानसमे विद्यापति अनुसूचन ओहिना जीवित छथि आर हुनकेँ माध्यमसँ जीवित अछि मैथिली भाषा।

प्राचार्य राधाकृष्ण चौधरी

## विद्यापतिक काव्यमे पुस्त्य-परिकल्पना

भारतीय इतिहासक मध्ययुगमे मुसलमानी धर्म सिंधु-कुलसं गंगाक कछारधरि आविरोल छल, यीशुधर्म अपन जन्मभूमि भारतवर्षसँ अपन जड़ि उखाड़ि सुदूर पूर्वमे धरा-शायी भए चुकल छल, पराजित हिन्दू जाति तदधिनिक शक्ति नगण्य बूझि मस्तिष्क शरण लेलक, भारतीय सामंती समाजकेँ मुसलमानी सामंती समाजक चिलासिता आ आहम्यर आच्छादिन कए लेलक तथा ऐतिहासिक जन-जीवन अस्त-व्यस्त भए एकगोट महान्दोलनक तैयारी कए रहल छल । विभिन्न घाटमे चिभक होइतहुँ ई अपन समस्ययात्मक प्रयुक्तिक कारण विश्वक एक पैघ पुनर्जागरण प्रमाणित भेल । ऐहि ठामक भाषा संस्कृत धर्मशास्त्रक युष्कमे आवद्ध भए कुपतल भए रहल छल आ 'देसिल घयना सयजन मिठा' प्रमाणित भए रहल छल । विद्यापति भारतीय इतिहासक पहने संक्रान्तिकालमे परस्पर विरोधी विचार धाराक मिलन-घिनु पर आसनस्थ छथि । परस्पर विरोधी प्रवृत्तिक सम्मिलनक कारणेँ दिनक व्यक्तित्व उत्तमे विचाररूपद अछि कृतित्वसँ ओ ओतथे प्रद्वार्यद छथि ।

विद्यापतिकें सिद्धि इतिहास, भूगोल, स्मृति धर्मशास्त्र पुराण, एतद्विषय कथा ओ नाटक सिद्धयामे भने भेटल छलनिद किन्तु प्रसिद्धि भेटल मैथिली गीतक कारणेँ प्रायः

कहल जाइत अछि जे विद्यापति मींदवीपासक कवि छलाह, शृंगारिक छल ह जेकर सौंदर्य सम्बन्धी दृष्टिकोण रूप आ अरूपक मध्य घिनु पर स्थिर छल । विद्यापतिक शृंगारिक रीतिमे पुरुषक विभिन्न रूपक खर्चा भेल अछि । कवि 'सुपुरुष' सुपुरु 'सुनागर' आदि हों पुरुषक उल्लेख कएने छथि । हुनका दृष्टिमे सुपुरुषसँ प्रेम उचित थिक आ कुपुरुष अथवा दुर्जनसँ प्रेम अनुचित । ते ई आवश्यक धुक्का जाइत अछि जे महा-कवि पुरुषक विषयमे अपन काव्य मध्य जे परिकल्पना कएने छथि नकर आधार का अछि ताहि पर विचार कएल जाए ।

भारतीय काव्यशास्त्रानुसार नयक नेता, चिनीत, मधुर, स्वामी, वक्ष प्रियंघव, लक्षप्रिय, प्रथमात, कुलीन रिधर एवं कलावान कदर गेल अछि ओ बुद्धि, उत्साह प्रभा, स्मृति आदिक समृद्धि सँ समन्वित तथा शूर, दृढ़, तेजस्वी, शास्त्र दृष्टिसँ युक्त एवं धार्मिक होइत छथि । आचार्य विश्वनाथक साहित्य दर्पणमे नायकक गुणक खर्चा एहि सँ भेल अछि :—

त्यागी हर्षी कुलीनः सुधीको कथौवनोत्साही ।

दक्षोऽनुरक्त लोकस्तेजोर्बद्धधर्माशालयान्नेता ॥

नायक त्याग भावनासँ भरल, महान कार्यक कर्ता, उच्चकुलोद्भव, बुद्धिबलसँ सम्पन्न, रूप यौवन एवं उत्साहक सम्पदासँ युक्त, निरन्तर उद्योगशील, जनताक स्नेहभाजन ओ तेजस्विता, चतुरता किंवा सुशीलताक निदर्शक हो ।

१. का० ६० १०१ श्लोक १०



हिन्दी कवि मतिराम नायकक लक्षण प्रस्तुत करते कहते छवि—

तरुण सुवन सुन्दर सुकुल कामकला परवीन ।  
नायक रौ मतिराम कवि कवित रसकान ॥<sup>१</sup>

उपर्युक्त लक्षणक आधार पर नायकक भिन्न-भिन्न भेद कएल गेल अछि । नाटकीय दृष्टिकोणसँ नायकक धीरो दास, धीरप्रशान्त, धीरललित एवँ धीरोद्यत ई चारि भेद कएल गेल अछि । काव्यशास्त्रीय दृष्टिकोणसँ नायकक पति उपपति एवँ वैशिक ई तीन भेद अछि जाहिमे पतिक पुनः अनुकूल, दक्षिण, धृष्ट एवँ शत्रु ई भेद नायिकाक प्रति हुनक व्यवहारक आधार पर कएल गेल अछि । काव्यशास्त्र मे नायकक सात्त्विक गुणक सर्वाँ सेहो भेल अछि । नायकक सात्त्विक गुण अछि— शोभा, चलास, माधुर्य, ताभीर्य, धैर्य, नेज, ललित एवँ आँखर्य<sup>२</sup> । कइबाक अभिप्राय जे नायकमे धीरता, कुशलता, सत्यवादिता, सत्याचरण, महान उत्साह अनुरागिता, छोट पर दया आ वैयक संग प्रतिस्पर्धा ओकर दृष्टिमे धीरता, बालिमे विचित्रता, बोलचालमे मन्द-हासक छटा, समः शोभ रहलहु मनक सुखिरता ओ शान्ति, भय, क्रोध, शोक आदिमे बाकृति पर निर्णयकारिता, कर्तव्य-

२. रसगज ।

३. सा० ६० ५०१ श्लोक ५० ।

विपरीत मे दुःख आक्षेप नहि सहय, दानशालता, सम-दानी आदि गुणक सम्यक् समावेश रहब सात्त्विक गुण भाक

महाकवि विशाखदत्तक दृष्टिमे सेहो नायकक उत्तम-गुण तम छईन्हि आ अपन कविता मे ओ कतको ठाम 'पुरुष'क उल्लेख कएने छथि । 'पुरुष' ककरा काही पहि अपन पर महाकवि 'पुरुष पराक्षा' मे विचार कएने छथि । पुरुष परीक्षा बालक आ नायकिक लोकनिक लेल लिखल गेल । हिनोपदेश ओ पंचनख सँ पुरुष परीक्षा मे ई अन्तर ई छै जे ओ भव कामलमति बालक लोकनिक हेतु छल मुदा ई विद्याविजयके तयपरिचिन्तनधिया ।

मुई पार मनीषाभनसिजकला कौतुकजुषाम् ॥

राजा पारवार जो सुदुष्टिक प्रश्नोत्तर सँ कथाक नायक होएत अछि । कन्या पद्याधर्ताक हेतु पर बाही । मुदा विचार देलथिन्ह जे पुरुष सँ विवाह करबियाँक । कारण,

वीर मुख सविशरय पुरुषः पुरुषार्थवान् ।

नव-ये पुरुषाकाराः पशयः पुच्छवर्जिता ॥<sup>४</sup>

न त्वर्य जे वीर, मुख, सविशर आ पुरुषार्थवान्क अनिरिक्त पुरुषाकार होएतहु पुरुष नहि, पशु थिक । उदाहरण-प्रभुदाहरण नए पुरुषक विभिन्न रूपक सर्वाँ पहि मे भेल । पुरुष लीला

अछि । तहिना अपन कौशिल्यता मे सेहो महाकवि पुरुष पर विचार केने छथि । कौन पुरुष पुरुष छथि पुरुष वहा स्वर्ग अछि, जन्मसाधति केथो पुरुष तहि होत अछि । जल देतहि मेघ जलध धिक आता धुआँक देरी जलध नहि धिक —

पुरितत्तणेन पुरित्तओ तहि पुरित्तओ जस मनो न ।

अलदानेनहु जलओ नहु जलओ पुरित्तओ धमो ॥<sup>१</sup>

ओ पुरुषक परिभाषा देन कहैत छथि जे पुरुष वपद धिकाह जे कौशल केँ प्राप्त कैलक अछि युद्ध मे शूर अछि, जकर हृदय धर्मपरायण छैक, विपद काम मे अ दीनत व वयन नहि बाजए स्वभाषहि जे प्रसन्न रहए, उक्त मन्त्रधर मुसल भाग करए, गुन गन' द्रव्य अर्थात् दान दए जे ओकरा घिसरि जाए तब जे पूर्ण यत्तिष्ठ होथि—

'किञ्चि लज, मूर सङ्ग्राम, धम्म पराधनहिअअ, विपन्नकसम नहु दीन जम्पइ.

तहुजनाव सानइ सुअत भुअइ जातु संपइ, शर्मे' दव्य.

चिन्मइ सन्तु सहभ सपर,

एते लगवणे लखिअइ पुरुष पसंसओ नीर ।<sup>२</sup>

पुरुषक उपर्युक्त विशेषता सभनायकक साक्षिक गुणक स्मरण दिआ दैत अछि । महाकवि विशाखा केँ जीयम

१ कौशिल्यता, पहिल पदसभ, डा० उमेश मिश्र, पृ० १

२ ऐक्य, पृ० ३

ओ जगजक धनुमंशी अनुभव छल, सामाजिक उत्तर-दायित्वक पूर्ण परिचय छल । तँ महाकवि जहिना अपन पुरुष परीक्षा ओ कौशल्यता मे पुरुषक ध्यान रखलन्हि अछि, तहिना पश्चात्ता मे सेहो 'सुपुरुषक' उल्लेख कएने छथ । ओना पदावली मे पुरुषक जे भिन्न-भिन्न रूप आयल अछि तकर सबहक यदि विवेचन कएल जाए तँ निबन्धक कठेपर बह रोध भए जाएत तँ हम पदावली मे प्रयुक्त 'सुपुरुष' धरि अपना केँ सीमित रहैत छौ । ओना विद्या-पतिक काव्य मे पुरुषक जे भिन्न-भिन्न रूप प्रदर्शित अछि, ओ फराक अध्ययनक विषय धिक ।

विद्यापति अपन पदावली मे 'सुपुरुषक' जे उल्लेख कएने छथि से काम सूत्रक नागरिक मात्र नहि धिकाह । महाकवि सुपुरुषक लक्षण द्वारा नायकादीन अस्तव्यस्त हिन्दू समाजमे एक प्रकारक भावनाक स्थापना कैलन्हि । भाव प्रश्न ई अछि जे महाकविक दृष्टिमे सुपुरुषक लक्षण की ? यदि पदावलीक अध्ययन करब तँ एता चलत जे सुपुरुषक निम्नलिखित लक्षण ओ विशेषता धिक - जहिना चन्द्रमाक कला दिनानुदिन विकसित होइत अछि तहिना सुपुरुषक प्रेम नित्य चर्चमान धिक ।<sup>३</sup> सुपुरुषक धन्वत

• (i) दिन दिन बाढ़ए सुख नेह । सन्दिने सैलन चन्द्रक रद ।

(नेपाल पदावली, पद-५१ मिश्र मञ्जुमदार-१९८८)

(ii) सुपुरुष पेन करहु नहि दाइ । दिने दिने चाइकला जनु बाइ ॥

(मिश्र मञ्जुमदार पदावली, पद-३१५)

(iii) सुपुरुष पेन सुभसि अनुदाग । दिन दिन बाइ अधिक दिन लाग ॥

(मिश्र मञ्जुमदार पदावली, पद-४)



पाथरक रेखा थिक । ओ कानो परिमिति होहि नहि सक्न  
अछि । जहिना हाथसँ पाथर पर उगल रेखाकेँ मेदाआल  
नहि जा सकैत अछि, तहिना सुपुष्पक वस्त्रन कूट नहि  
भए सकैछ, बदलि नहि सकैछ । सुपुष्पक महेश्वर देव  
सदृश अछि कारण भाषाने आरम मन्त्रन पूर्व । छ ।  
ओ जसैत छथि ते कोन समय की बाजी आ जे बाजी मकर  
पालन करी । हुनक वस्त्रन मधुर हाइन अछि हृदय  
कोमल होइत अछि आ कफरो हृदय पर हुनक घाणा आधान  
नहि पहुँचैत अछि ।

(i) बिना कुनए दूक नहि होइत । हुनक वस्त्रन कानक बर

(मिथ महु = पद १००, १०१, १०२)

(ii) हे सखि तुम कहि परमान । (मिथ महु = पद १०३)

(iii) सुपुष्प वस्त्रन दरम मेदा । (मिथ महु = पद १०४)

(मिथ महु = पद १०५)

(iv) सुपुष्प वस्त्रन पतानक देह । (मिथ महु = पद १०६)

(v) सुपुष्प भावा सुपुष्प विमेश । कसहुन विनाज पतानक देह ।

(मिथ महु = पद १०७, नेपाल पद = ११६)

(vi) सुपुष्प वस्त्रन पतानक देह । (मिथ महु = पद १०८)

८ सुपुष्प भावा सुपुष्प विमेश । एत दिन सुपुष्प वस्त्रन नहि भे ।

(मिथ महु = पद १०९)

१० सुपुष्प वस्त्रन पतानक देह । (मिथ महु = पद ११०)

(मिथ महु = पद १११)

११ (i) सुपुष्प वस्त्रन पतानक देह । (मिथ महु = पद ११२)

(मिथ महु = पद ११३)

(ii) सुपुष्प वस्त्रन पतानक देह । (मिथ महु = पद ११४)

(मिथ महु = पद ११५)

(iii) वस्त्रन पतानक देह । (मिथ महु = पद ११६)

(मिथ महु = पद ११७, ११८)

हुनक प्रेमक मन्त्र नहि होइत अछि । हुनक प्रेम  
पवित्र होइत अछि । वर सपुष्प । वर सपुष्प । वर सपुष्प ।  
हृदय पर कान नहि विजय प्राप्त कएल जा सकैत अछि, से  
ओ जनेत छथि । हुनक प्रेम सुख भो मधुर होइत अछि ।  
ओ भजन कथयथा नहि छोटि सकैत छथि । सुपुष्पक प्रेम  
महेश्वर भवता वर सपुष्प विजय प्राप्त कएल जाइत अछि । जे पुन-  
पुन सपुष्पक प्रेम पर नहि रहैत छथि । एक दिशि यदि  
नयनिवि आ स्वर्ण अछि त ओही लहर सुपुष्पक प्रेम  
थिक । सुपुष्प प्रेम कथामे पाथ पर, भजन प्रेमली पर

१३ (i) सुपुष्प प्रेम पवित्र होइत । (मिथ महु = पद ११९)

(ii) सुपुष्प प्रेम पवित्र होइत । (मिथ महु = पद १२०)

१४ (i) सुपुष्प प्रेम पवित्र होइत । (मिथ महु = पद १२१)

(ii) सुपुष्प प्रेम पवित्र होइत । (मिथ महु = पद १२२)

ओन घरि हो निवाह । (मिथ महु = पद १२३)

(iii) सुपुष्प प्रेम पवित्र होइत । (मिथ महु = पद १२४)

१५ (i) सुपुष्प प्रेम पवित्र होइत । (मिथ महु = पद १२५)

(ii) सुपुष्प प्रेम पवित्र होइत । (मिथ महु = पद १२६)

वस्त्रन पतानक देह । (मिथ महु = पद १२७, १२८)

१६ (i) सुपुष्प प्रेम पवित्र होइत । (मिथ महु = पद १२९)

महेश्वर ओही पुनक विजय । (मिथ महु = पद १३०)

१७ (i) सुपुष्प प्रेम पवित्र होइत । (मिथ महु = पद १३१)

करो कसो सुहृद कथयथा देहि पतानक देह । (मिथ महु = पद १३२)

१८ सुपुष्प प्रेम पवित्र होइत । (मिथ महु = पद १३३)

वस्त्रन पतानक देह । (मिथ महु = पद १३४)

१९ एक दिशि मन्त्रमध नव विधि होइ ।

कसोहा विधि नवस सुपुष्प प्रेम । (मिथ महु = पद १३५)

पूर्ण ध्यान रहैत छथि कारण हुनका स्वर्ण सो लोहक भएन  
रक पूर्ण ज्ञान रहैत छन्हि ।<sup>१</sup> सम्पन्निक ताश भेटहुँ सुपुत्र  
विधेक छष्ट नहि होइत छथि अधान् सम्पत्ति नए भेटा पर  
अपन प्रिय पात्रक प्रति प्रेम भावनामे कनेको कसबि नहि  
करैत छथि, अपन वननक हुनका स्मरण रहैत छन्हि अपन  
प्रतिष्ठा (Commitment) मे ओ पढ नहि रहैत छथि ।  
सुपुत्र धीर होइत छथि आ कसबो सङ्कट पड़दा पर निव-  
लित नहि होइत छथि आने सुखक समय अपला पर ओ  
उद्विग्नमन होइत छथि ।

ओ गीताक 'स्वितर्थाक' सदृश होइतहुँ 'वातराग'  
नहि होइत छथि । अकरा अंगीकार करैत छथि तकर पालन  
अपन भ्रम बुझैत छथि ।<sup>२</sup> हुनका वाक्य आ कथन हाथीक  
दाँत सदृश होइत छथि जकरा नुकापय आ नहि जमैत  
छथि ।<sup>३</sup> सुपुत्र केहनो अवस्थामे धीर बनल रहैत छथि ।  
मनुहरि धीर पुत्रक लक्षण लिखैत कहैत छथि :—

१- शत कलन तुव अवकन कत न तापर मेन ।

सुपुत्र विचलन को नैछ के विरह काएस हम ॥ ( गी० पद-१६ )

१६ केव मेले रहे विवेक,

तेज पुत्र काया सह एक ॥ ( गी० मनु० पद-४६४ )

२० अंगीकृत मुद्रिका परिपालयति ।

२१ हाथीक दहन पुत्र कथन कउने बाहर होय,

ओ नहि सुकय वचन पुत्र कतो करो कोय ॥

( नेपाल पद ७ मि० मनु० पद ३६२ )

निन्दनु नीतिनिपुणो यदि वा स्तुवन्तु,

नक्षी सभा विद्वन्तु गच्छन्तु वाययेष्ठम् ।

यद्येव वा मरणमस्तु युगान्तरे,

वा व्याढ्यात पर्यं प्रविचलन्ति पशुमधोराः ।<sup>२२</sup>

अथवा गीताक : -

सम्प्राप्तिमस्य चाकीर्तिमरजादिति रिध्यते ।<sup>२३</sup>

सहिता सुपुत्र मेरो छैन छथि । कायमे स्थिति भएन  
प्राप्तिम मरि जाइत आइत सुख उद्वेग के अंगीकार  
करैत छथि ।<sup>२४</sup> सुपुत्र अपन भ्रम नहि पकड़ करैत छथि ।<sup>२५</sup>  
आ परदुखकार होइत छथि ।<sup>२६</sup> सुपुत्रक वचन पारम  
संमन्धरि एक सदृश होइत छथि आ दुर्जनक वचनक पता  
थिमु परिणामे नहि भेटैछ ।<sup>२७</sup> सुपुत्रक वचन साहिता स्थिर  
नैहोइत भविष्य ।

२२ गीता ।

२३ १) अ० २) मनु० पद-४६४ ३) सुपुत्र मनु० पद-४६४ ४)

मनु० पद-४६४ ५) मनु० पद-४६४ ६) मनु० पद-४६४ ७)

मनु० पद-४६४ ८) मनु० पद-४६४ ९) मनु० पद-४६४ १०)

मनु० पद-४६४ ११) मनु० पद-४६४ १२)

१३) मनु० पद-४६४ १४) मनु० पद-४६४ १५)

मनु० पद-४६४ १६)

१७) मनु० पद-४६४ १८) मनु० पद-४६४ १९)

मनु० पद-४६४ २०)

२१) मनु० पद-४६४ २२) मनु० पद-४६४ २३)

२४) मनु० पद-४६४ २५) मनु० पद-४६४ २६)

२७) मनु० पद-४६४ २८) मनु० पद-४६४ २९)



रहीत अछि जेना चन्द्रमामे हरिक क बिल ओ अपन बचनक निर्बाह करैत छथि ओ अन्यत्र रहना पर हुनक प्रेस कम नहि होइत अछि ।

सुपुरुषकेँ यदि 'शुनारि' 'मृतांतारि' भेटि गेल तँ समाजक लेल ई एक मोट बड़ पैघ प्रसन्नताक विषय चिक कारण एहि प्रकारक मिलन स्वार्थकेँ सुगंधि प्रदान करैत अछि । किन्तु बहना भेलन तारो छथि उ पमिस ऐसन बचनन भूषा ज इन छथि आ तखन हुनक जावन जे सफट दलन आ अवसादागत, वेदना विगलिन आ अश्रुनय हाइत अछि, पुरुषाकार धार्मिक मूर्तता होएबाक जे स्वांग करैत छथि तकर ज दुःपाठ्यात्मक होइत अछि तहु पर महाकवि प्रमेकानक गाव निखन छथि । नायिक वेदन, ओ पारिवारिक आ समाज पथावलाक कताक मोहम भेटत ।

सहाकारक मोह सभमे जे सुपुरुषक लक्षण भेटैत अछि तात आधर पर ई कहल जा सकत अछि जे सुपुरुषमे विवेक, मध्यमता, चपल पावनक क्षमता स्थिरता, विश्वसनीयता, लगनशीलता ईन, सदासे सच्चाई प्रेरे, गाभीयं, रुच रोचन, उदारता परदृष्टकातरता, दानशीलता हृदयक मागवता आदि रहव जाही ।

—प्रो० बालगोविन्द झा 'अधित'

कलकत्ता विश्वविद्यालय में

मैथिलीक स्थान कोना ?

प्राइ में पञ्चम एकादश वर्ष पूरा जाहि समय मे बिहार प्राप्तक मैथिली भाषा तथा लोकनिक विश्वविद्यालयक उन्नततम कक्षाक नाम जया जे विभिन्नम प्राथमिकता मे मैथिली पठन-पाठनक कल्पना नहि कथने छलाह, संभवताक तपनो नहि देखल जना नहि समय गन १९१३-१९१८ ई०मे सुदुर दूर लक्षित कलकत्ता विश्वविद्यालयक उपकुलपति महामहिम सर प्रभुलाल मुखर्जी निम्नतम कक्षा से उच्चतम एम० ए० कक्षाधरि मैथिली पठन-पाठनक व्यवस्था करोलन्हि, जाहि हेतु प्रत्येक मैथिली भाषा-भाषी हुनक विर कृतज्ञ एवं आभारी रहत ।

सन १९१९-२० ई०मे कलकत्ता उच्च माध्यालयक भूतपूर्व भूष्य अध्यापकीन तथा कलकत्ता विश्वविद्यालयक नत्कालीन उपकुलपति सर बालगोविन्द मुखर्जीक विचार छलन्हि जे भारत-वर्षक विभिन्न संशोध भाषाक प्रान्ति प्रचार ओ प्रसारक हेतु एम० ए० कक्षाधरि पठन-पाठनक व्यवस्था होयव आवश्यक

थोक, तें हिन्दी, बंगला, तमिल, तेलगू, मलयालम, मराठी उडिया, उर्दू पोन्नू प्रभृति जोदह भाषाक पाठ्य क्रमक व्यवस्था विश्वविद्यालय में करवाक निर्णय लेलन्हि ओ तत्कालीन गवर्नर ( जे विश्वविद्यालयक कुलपति छलाह ) सँ एतदर्थ अर्ध व्यवस्थाक स्वीकृति प्राप्त करैत ओकर आवन्तनो भिन्न-भिन्न भाषाक हेतुए कए देसथिन्ह । परन्तु दुर्भाग्यवश गौयलीक नाम श्राद्धि सूची में सम्मिलित नहि कएल गेल छल ।

अहि गत्य भ बिहारक भूतपूर्व मंत्री श्री इन्दिरा मिश्र\* जीक निता श्री बबुआ जी मिश्र (बिहारक दरभंगा जिलान्तर्गत कोदरख ग्राम निवासी) कथकता विश्वविद्यालयक मेण्डेनोगी ( ज्योतिषशास्त्र )क प्राध्यापक छलाह जे तब परम मित्र छल ओ तम दुहु गोटे पूर्णियाक श्रीनगर दुर्ग हीक कलकत्ता स्थित काँटीक एके कोठलीमें रहैत छलहुँ । अल्पकाल में ओ हमरा कहलाह— 'बड़ दुःखक विषय जे विश्वविद्यालय में जोदह भाषाक एम० ए० कक्षापरि पाठनक व्यवस्था भेल मुदा मैथिली के स्थान नहि देल गेल ।'

ई सुनि हम हुनका सँग गए श्रीमान् अनुतोष मुखजीक मोहि ठाम देलहुँ । ई उल्लिखित करवा में अप्रासंगिक नहि होयत जे शुभ लभ में भट भेल तब अनुतोष मुखजीक हमरा पर विद्यार्थी जीवनहि में असीम अनुकंपा रहैत छलन्हि तथा हमरा पुत्रवत् स्नेह करैत छलाह । इएह कारण छल जे बंगाल गवर्नरक द्वांगसेटरक अस्थाई पद से हमरा पदभ्याग कराए विश्व-

● सम्प्रति अजय, बिहार विधान सभा ।

विद्यालयक पोस्ट ग्रेजुएट कक्षा में हिन्दी पदव्याक हेतु पद-स्थापित कएलन्हि । हमरा सँ ओ बातलाव स्नेहवश सभ दिन बंगला भाषा में करैत छलाह तें ओही भाषा में हम कहनिचैन्ह— 'सर ए को कल्लेन । मैथिली बांगलार मध्ये एतः सामान्य ओ सामञ्जस्य जे किछु दिन पर्यन्त विद्यापति ठाकुर मैथिली कवि छलैन कि बांगलार कवि छलैन, एनिये भयानक वाद-विवाद छलै । जस्टिस नारदाचरण मिश्र अखन दरभंगा गिये बिरुकी ग्रामर अजलोहन कल्लेन तथा पंजीकार ओ तबस्य विशिष्ट लाकेर सगे बाबुलाप कल्लेन तबे गिये तिनो विद्यापति के मैथिलीर कवि बोले स्वीकार करियेन । इति पूर्व विद्यापति बांगलार कवि बोले बांगला देजे विख्यात छलैन, एतइ युष्मा जाय ज बांगलार साहित्य ओ मैथिली साहित्येर कतो समता, कनो सादृश्य अछे । ता छोड़ा ताव पत्रे लिखित प्राचीन य गवा अखर ओ मिथिला आधुनिक अखरेर सगे काना भेद नाय । किन्तु एम० ए० कक्षार पठन पाठनेर परिकल्पना ते आपनो मैथिली के कोनो स्थान ना दिए एके बारइ वाद दिये दितेन्ह ए बड़ दुःखक विषय' ।

अहि पद आ कहलन्हि—'ठाकिइत । ए तो भयानक भूल होय छे किन्तु एखन तें स्वीकृत समस्त ठाका धियो (अ वन्तन) होय गिये छे आर एइ वच्छरे मैथिली होवाक कोनो उपाय नइ, तब यदि आपनो अइइ हजार ठाकार तान दिनेर मध्ये योगाद करे दितेपारेन तबे आमा आमाओ कीन्सल निटीगे मैथिली के



कोमो गतिसे देवा ने पार थो । ता छाड़ा एह बख्खरे आर उपाय नाथ ।”

यद्यपि ई मुनि हम एतेक भीधना मे ओतेक टाका जुता राकबाक सम्भावना से खिन्न होइत बासा लोटलहुँ तथापि साहस पुर सर अपन कर्तव्य से विमुक्त नहि होइत रजौदायांस राजा ओ टक नाथ बीधरी से (जे कि भोहि समय से कालोघाट मे छुवाह) भट कए सब विषय से हुनका अवगत कराबैत प्रकाइ हजाब टाका एतदर्थ दान देवाक हेतु निवेदन कएलियेन्ह । परन्तु ओ कहसन्हि जे पाछी मुक्ति कए हम कहब । (प्रायः हुनका हमर कथा पर विश्वास सखन नहि भेलैन्हि) । समय कम सख हम ई मुनि सानो ठाम प्रयत्न करब अघि एव आवश्यक बुझल । हम तत्क्षणा श्रीनगराधीन राजा ओ कालिकाभन्द सिंह के ताद देखियेन्ह जे हम महत्त्वपूर्ण कार्यक हेतु पूर्णिया आविरहल छी, से हमरा पूर्णिया जवसन से काना सवारो पठा देल जाय ओ दार्जिलिंग भेल से पूर्णिया हेतु सध्या काल यिया भेलहुँ । प्रायः पूर्णिया जवसन पर हुनका स्वयं मोटर ले उपस्थित देखालियेन्ह । बहुत कृपण भेलहुँ या हुनका सब वार्ता कहलियेन्ह तथा हुनक संगे श्रीनगर हाइग चम्पानगर गेलहुँ । अतएव राजा बहादुर कीर्तानन्द सिंह के सब विषय से अवगत करौलियेन्ह । ओ ई सब मुनि बड़ प्रसन्न होइत बजलाह— अठ्ठाइ हजार टाका की दवेक ! देवे करबैक सऽ साढ़े सात हजाब टाका दिओक । ई कहि साढ़े सात हजाब टाकाक चेक हमरा नाम देलन्हि ओ एक टेलीग्राम सर आगुतोष मुखर्जी के देलियन्ह जे साढ़े

सात हजाब टाकाक चेक हम श्री ब्रजमाहन ठाकुर द्वारा एम० ए० म मैथिली चैधवाक स्थापना हेतु पठा रहल छी तथा एकर नाम—‘बनैली मैथिली चैधवा’ रखल जाय । एहन सुसंगीत ओ ओ जानकी महारानीक कृपा से जाति कान मे विध्वविधलय कोन्सलका एहि विषयक अतिम मीटिंग कलकत्ता मे होइत अनेक ओही समय सर आगुतोष मुखर्जी के ई टेलीग्राम भेटलन्हि । जकर परिणामस्वरूप कलकत्ता विश्वविद्यालय मे एम० ए० कक्षा पर्यन्त मैथिलीक पठ्यक्रम स्वीकृत कएल गेल ।

जखन हम पुनः लौटि कए गलकत्ता पहुँचलहुँ तखन ज्ञान भेल जे श्री राजा टंकनाथ बीधरी सेहो उधारता पूर्वक स ड सीत हजार टाका देवाक सूचना सर मुखर्जी के देलियन्ह तथा टंकनाथ मैथिली चैधवा निर्धारण करबाक अनुरोध कलकत्ता एहि तरहें एगारह हजार टाका तत्कालिक कार्यक हेतु सभहोत भए गेल ।

जखन सर मुखर्जी से भेट भेल तऽ कहलन्हि—‘की करे एतो टाका योगार क्यो पाइलैत’ हम कहलियन्ह—‘आपनार नाम विक्री करे’ (ताहि पर ओ टहाका दए हँसलाह) ओ कहलन्हि जे—‘आर एखन बोएर योगार कइत ओ दु टी मैथिली प्राफेसर, एक टी संस्कृत नाइंग आर एकटी इंगलिस तोइम प्रोफेसरेर निवृत्तिर व्यवस्था करुन’ ।

एतदर्थ विश्वविद्यालयक खर्च पद पुस्तक तथा प्राध्यापकक खर्च हेतु दरमगा प्राप्ति रवान जएबाक हमरा आग्रह कएलन्हि ओ एक पत्र महाराजाधिराज सर रामेश्वर सिंहक

नाम देलन्हि । महाराजाधिराज ओहि समय कलकत्ते में छलाह तँ ओतहि हुनका सँ भेट कए पत्र देलियन्ह । आ बड़ प्रसन्न भेलाह तथा विद्यापतिक एक गोती पढ़ि बजलाह जे ई केहन ललित अछि आ संगहि राज लाइयेरी सँ मुद्रित तथा हस्त लिखित पुस्तक सँ सहायता करवाक आश्वासन देलन्हि ।

परन्तु जखन हम दरभंगा पहुँचलहुँ तखन एकर प्रतिकूल हुनका अन्य मनस्क पाओल । पाछो जात भेल जे बनलीक नामे मैथिलीक बेघर भए गेल से जानि आ असन्तुष्ट छलाह । ओहि ठाम एकटा वसना आओरो घटल । तरौनी निवासी महा महोपाध्याय पं० परमेश्वर भा ओहि समय में दरभंगा राज लाइयेरीक पुस्तकाध्याय तथा द्वारप इत सेहो छलाह एवं 'मिथिला' सभ्य विमर्श नामक हुनक धारावाहिक आख्यान मैथिली भाषा में प्रकाशित होइत छलन्हि । हम हुनकाहि संस्कृत निष्ठ मैथिली प्राध्यापकक हुनु जयन कएल तथा तत्काल डेढ़ सय टाका मास एवं छ मासक बाद दूहसय टाका मास आ तत्पश्चात् एक वर्षक उपरान्त गवर्नमेण्टक निश्चित वेतनमान भेटवाक वचन देलियन्ह । ओहि समय हुनका मास पचास टाका तथा उपालि (भोजनार्थ अतिरिक्त अन्न) राज सँ भेटैत छन्ह । पंडित जी सहर्ष कलकत्ता जयवाक हेतु प्रस्तुत भेलाह । मुदा महाराजाधिराज सँ अनुमति लेब आषाढक युक्ति हुनका सँ निवेदन कयनयन्ह । महाराजाधिराज पहिनिहि सँ असन्तुष्ट छलाह, ई सुनि कहुँ भऽ पंडित जी सँ पुछनयन्ह—संपति

कलेक टाका मासिक वेतन आगत भेटत' तँ पंडित जी उत्तर देलयन्ह—'डेढ़ सय टाका । ताहि पर महाराजाधिराज कहल यिन्ह—'डेढ़ सय टाका मास इत-यावेन चरक भाड़ा काटि साठ टाका सँ बेसी नहि बाधत । आइ नँ साठ टाका मासिक वेतन अहाँ कँ अहीछाम भेटत तँ महाँ कलकत्ता जुनि जाइ ।

एतये सहि, आवेश में आवि महाराजाधिराज हमर विरुद्ध नर प्राणुतेय मुखर्जी कँ एक तारो देलियन्ह जे पं० श्री ब्रजमोहन ठाकुर एतय आवि हमर द्वार पंडित परमेश्वर भा क पुसिया कए लए जेवाक प्रयास करैत छलाह । ई बात हमरा पाछाँ कलकत्ता पहुँचलाक पश्चात् श्रीमान् महामहिम प्राणु बाबू सँ जात भेल । ओ एहि सँ हमरा पर क्रुद्ध नहि भेलाह अपितु हास्य करैत वार्जत भेलाह—“की एकम आपतार महाराजा, दारभंगार दारपंडित महा महापाध्याय श्री परमेश्वर भा ? का कँ चो छेले जे ता के ता की आपना कुमलिये कलकत्तार विश्व-विद्यालये आगते चेये छिलेन आ ई कि ओ अभाक्य हंसैत भेलाह ।

महाराजाधिराजक वचन सँ पंडित जी के किकलैय विमूढ़ देशि हम कहियेन्ह जे अरने एतहि रहन जाय तथा एक सेखक हम नियुक्तक देन छा जे राज लाइयेरी सँ पुस्तक सभक नकल उतारि कलकत्ता पठावैत रहलाह । एतदर्थ आगत सहानुभूति अपेक्षित अछि । पंडितजीक सहयोग हमरा भेटल तथा तस टाका मासिक वेतन पर एव सेवक नियुक्त कएल । आगत सँ विद्व भऽ मधुवती पहुँचलहुँ । मिथिला प्रेस में प्रेस



वए मिथिला मिहिर पत्र मे विभागनक माध्यम सँ मैथिली भाषा-भाषी लोकन केँ यादह तथा अनुरोध कएलियन्ह जे भिनका ओहिठाम मैथिली साहित्यक मुद्रित अमुद्रित हस्तलिखित पुस्तक, गीत आदि हो मे देखि अवकाश नवय करबाक सुविधा प्रदान कऽ एहि कार्य मे सहयोग दैथ । संगहि दुइटा प्राध्यापक पदक हेतु याज्ञान सेवा कऽ देन छलियंक । एहि तरहें वरभंगा मंडयान्तर्गत धन-नव मूर गाम मे धुमैर-किरौन मैथिली साहित्यक सामग्री एकत्रित कएल जाहिमे श्री लालदास सँ मैथिली मे 'उत्तर राम चरित' तथा लोहना कविजक प्राचार्य श्री नेजनाथ ठाकुर ( जे कि हमर पिता छलाह ) सँ 'गणेश जन्म भेटल । हम जे मैथिली साहित्यक सामग्री एकत्रित कएल ताहि मे कवि काकिल विद्यापतिक एकटा 'पदावली' फरीदपुर चदा भा कृत मैथिली रामायण डाक्टर विश्वरामनक मैथिली रामर ओ उमापतिक 'पारिजात हरण' अदि मुख्य छल । एतदतिरिक्त फतको हस्तलिखित पुस्तक गीत आदि भेटल छल जकर नाम एतेक दिन विज्ञता सन्ती स्मरण मे नहि अवैत अछि ।

तकर पश्चात् काशी रेलहुँ जसय 'मिथिला माद'क संपादक ब्रह्म सीध (वरभंगा) निवासी म० ग० प० मुखोदर भा में भेट कएल । ओ सभ समाचार सुनि अति प्रसन्न भेलाह तथा तावत् पर्वन्त 'मिथिला मोद' पत्रिकाक प्रकाशित सभ अंक आदिक प्रशन्नता व्यक्त करत उत्साह पूर्वक देखिन्ह जाहि सँ कि याछा मैथिली पाठ्य निपमावली (सिलेसस) प्रस्तुत करवामे

बहुतो सहायता भेटल तदुपरान्त गजहरा (वरभंगा) निवासी म० ग० प० जयदेव मिश्र सँ संपर्क स्थापित कएल तथा हुनका सँ बहुत प्रकारक सहायता भेटल । संगहि धनकोल (मुजफ्फरपुर) निवासी स्वर्णपदक विभूषित पं० मुक्तिनाथ भा ज्योतिषाचार्य जे ओहि समय काशीमे छलाह ( जे कि पूर्णियाँक वर्तमान अधर समाहर्ता १० श्री मुमकर भाक पिता रहथिन्ह ) सँ भेट कएल ओ हुनकासँ बहुतो हस्त लिखित लेख मन्वन्धी सूचना भेटल । हुनक सङ्ग काशीनरेशक श्योड़ी रामनगर जाय पण्डित जीवन भा सँ 'सुन्दर संयोग' नामक मैथिली नाटक उपलब्ध कएल । तत् पश्चात् काशी सँ इलाहाबाद जा कऽ म० ग० डा० श्री गङ्गानाथ भा सँ भेट कएलहुँ तथा हुनक निर्दलानुसार हुनक ग्राम पाहीडोल ( वरभंगा ) पहुँचि हुनक आता ओ गणमाध बाबू सँ भेट कएल तथा हुनक पारिवारिक हस्तलिखित अमुद्रित मैथिली गीत सभक संग्रह कएल ।

एहि प्रकारे मैथिली भाषाक मुद्रित आभार हस्तलिखित पुस्तक तथा गीत आदि संग्रहित करैत पचही इथोद्वीक मिथिला राज कुल भूषण ओ मुलापति सिंहक भानिज ओ गङ्गापति सिंहकेँ अंगजी निष्ठ मैथिलीक प्राध्यापकक हेतु चयन कऽ अपन सङ्ग हुनका लऽ कऽ कलकत्ता पहुँचलहुँ एत हुनका महागद्दिम आशुबाबू सँ परिचय कराओल तथा संग्रहीत मुद्रित तथा हस्तलिखित पुस्तक लेख आदि सभ देखीनियन्ह ।

एहि सभमे ओ बहुत प्रसन्न भेलाह तथा मैथिली पाठ्यक्रमक हेतु मुख्य (प्रिन्सिपल) तथा गीण (सपसिडियरी) दुनु तरहक

विद्यार्थीक हेतुक नियमावली ( सिनेवम ) प्राप्तु करवाक भाव हमरहि देखन्हि ।

तत्पश्चात् कोषमल ( दरभङ्गा ) निवासी प्रगाढ़ पण्डित श्री लुट्टी भा के संस्कृत निष्ठ मैथिली प्राध्यापक पद पर आसीन करायोस गेल ।

प्रथम प्रकारे कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्रार्थमिक ( प्राइमरी ) कक्षा में स्नातकोत्तर ( एम० ए० ) कक्षा चरि मैथिली पठन-पाठनक व्यवस्था सम्पन्न भेल ।

तदुपरांत बङ्गालक सऽ कलेको वार्षिक ओ विहारक दरभङ्गा, मुनेर, भागलपुरक अनेकों ठरति तथा पूर्णियाक श्री केदार चौधरी बकीर तथा परवाहा ( पूर्णिया ) निवासी श्री माधव मिश्र सेहो मैथिली में एम० ए० कएलन्हि ।

एहि सम्बन्ध में म० म० डा० जगन् मिश्रक सुयोग्य वाक्य डा० श्री जयकान्त मिश्र हमरा पत्र देने छलाह जे कलकत्ता विश्वविद्यालय में मैथिलीक समावेश काना भेल से लिखल जाय, जाहि सँ कि हम अपन प्रस्तावित पुस्तक में आकर सन्निवेश करौ ।

परन्तु, कलकत्ता युद्धि सँ कएल गेल अपन ई कार्यक प्रोत्साहा (प्रचार) करय हष्ट नहि छल ते हम हुनका पत्रोत्तर नहि दैलियेह ।

किन्तु जखन मुख्य न्यायाधीश श्री सतोशचन्द्र मिश्र महादयक अध्यक्षता में पूर्णिया में हमर अनुपस्थिति में श्री दाबू देवनाथ राम प्रभृति द्वारा आयोजित मैथिली साहित्यक गाण्डो

में एक पूर्णिया निवासी बचना जे कि मैथिली स्थापनाक दु करेक बात मैथिली लऽ एम० ए० उशीर भेल छलाह अपन चाह वहाँ पुढवा खेल मिथ्या भाषण देलन्हि जे 'विश्वविद्यालय में बारह हजार टाका संग्रह कए छएह व्यक्ति कलकत्ता विश्वविद्यालय में मैथिलीक समावेश करओलन्हि' । ई सुनि हमरा बहुत आश्चर्य एवं शोक भेल जे यथार्थ में जाहि व्यक्ति प्रार्थमिक सहायता में कलकत्ता विश्वविद्यालय में मैथिलीक समावेश भेल नहि व्यक्ति नामक चर्चा नहि नहि बनल गेल । किन्तु जे व्यक्ति एकी कैंचाक मशायरा नहि कएलन्हि तथा जिनका मैथिली भाषा सँ कोना सम्बन्ध नहि तनिक अखीन् विद्वान-च नामक डोलहो मोटल गेल ।

वस्तुस्थिति लऽ ई आदि जे उक्त बचना मशहूर नय अपनभिन्न छी जे कितक किनक प्राधिक सहायता या फान-कान प्रकार किनक-किनक सप्रयास एवं सुप्रयत्न-सँ ई काय सु-संपन्न भेल ।

एहि प्रकारक मिथ्या भाषण द्वारा यका महोदय अपना केँ सऽ हास्यापद कएवे कएलन्हि गंगहि प्राधिक बात देनिहार राजा लोकनिक प्रति समस्त मैथिली भाषा-भाषी केँ आमक स्थिति में र खि सकुलज वनबाक दुःप्रत्यय कएलन्हि ।

एहन परिस्थिति में आव हमर सूप रहय प्राधिक बात देनिहार उक्त राजा लोकनिक तथा अग्रगण्य साहाय्य कर्ता लोकनिक प्रति निर हृण्णताक स्थान पर परम कुण्ठताक भूषक होइत ।



इएह कारण भेल जे एतेक दिन अर्थात् ५०-५१ वर्षक बाद  
आइ मैथिली भाषा-भाषीक समक्ष ई दिना सविस्तर प्रकाशित  
कए देव आवश्यक नहि प्रष्टुत् अनिवार्य बुझना भेल जाहि सँ  
उक्त वक्ता द्वारा उत्पन्न कएल समझ निराकरण भए जाय  
तथा मैथिल समाज समर्थ वस्तु-स्थिति सँ अवगत भए जाय ।

एहि उद्देश्य सँ पूर्णियाक विद्यापति पर्वक मुख्यसर पर  
अपन कर्तव्यक दृष्टि सँ ई वार्ता संस्मरणक रूप में अर्पित  
कएल ।

पं० श्री ब्रजमोहन ठाकुरः

एम० ए० श्री० एल०

अवधान प्राप्त वकील पूर्णिया

एवं

कायस्थ विद्वन्विद्यालय

पोस्ट ग्रेजुएट फीनिशक

भूतपूर्व सदस्य ।

## पूर्णिया ओ मैथिली

सम्प्रति पूर्णिया जिलाक क्षेत्रफल ४२०० वर्गमीलक  
लगभग अछि । लगभग ८०० वर्गमील १९५६ ई० मे कटिउ  
वज्जालमे मिलि गेल । १७३८ ई० मे पूर्णियाक रकबा  
५००० वर्गमीलसँ किछु अधिक छल । वर्तमान फारी कोशक  
पश्चिम परगना धर्मपुर सरकार मुज्फ्फेरमे छल तथा दरभङ्गा  
महाराजक जमीन्दारी छल । १७३२ ई०मे पूर्णियाक नवाब  
सेक खाँ थोहि भूमिके पूर्णियामे मिलाए जेल तथा दरभङ्गाक  
महाराज राधव सिंह परगना धर्मपुरक जमीन्दार बनल रहलाह ।  
ताहि दिनक पूर्णिया तीन सरकारमे बाँटल छल—सरकार  
पूर्णिया, सरकार ताजपुर तथा सरकार मुज्फ्फेर । काबुलक  
बादशहाय उमेदुल मुल्क अमीर खाँक प्रयोग सेक खाँ रहथि  
तथा अत्यन्त सम्मानित राजपुरुष छलाह । हुनक समयमे  
पूर्णिया धन-धान्यसँ पूर्ण छल । दिनक मृत्युक बाद संघट  
अहमद खाँ पूर्णियाक फौजदार वा सैनिक प्रशासक भेलाह ।  
ई वज्जालक नवाब अलीउद्दीन खाँक जामाता छलाह एवं अपन  
मृत्यु पर्यन्त पूर्णियाक शासन कएलेन्हि । दिनक मृत्यु १७५६  
ई०मे भेल । दिनकहु शासनकालमे पूर्णिया समृद्धिवासी छल ।



जेष्ठ मुनाखरीनक लेखक गुलाम हुसैन खाँ तँ मुक्तकंठसे हिनक  
शासनक प्रशंसा कएल अछि । हिनक तोपखाना बड़ उन्नत  
छल ओ जकर कमान्डरक नाम छल सासी । सोही सालीक  
नामे एखनहुँ पूरियाँ नगरमे स्थित रामबागक समीप ललाइ  
छावनी महल्ला अछि । संपद ग्रन्थमे लोक मृत्युक पश्चात्  
हुनक पुत्र लोकत जङ्ग पूरियाँक सैनिक प्रशासक भेलाह ।  
ई किछुए दिन शासन कएल । हिनका अपन मसिधौत भाए  
सिराजुद्दौलासँ, जे अलीखर्दी लोक मृत्युक पश्चात् बङ्गालक  
नवाब भेलाह, भगवा भेलन्हि । तकर फलस्वरूप बङ्गालसँ  
राजमहल होइत सिराजुद्दौलाक सेना धाएल । लोकतजंग  
सिराजुद्दौलाक सेनापतिक संग मनिहारीक समीप बन्दियाबाड़ीक  
निकट युद्ध कएल जाहिमे लोकतजंग मारल गेलाह । तकर  
बाद किछुए-किछुए दिन पर सैनिक प्रशासकक परिवर्तन होइत  
गेल । १७६५ ई०मे जखन ईस्ट इण्डिया कम्पनीकेँ बङ्गाल  
विहार एव उड़ीसाक दिवनी भेटलक तँ पूरियाँ पर सेहो  
अङ्गरेजक आधिपत्य भए गेल । १७६९ ई०मे पूरियाँमे  
प्रथम कलक्टर जार्ज गुस्टावस डकारेलक नियुक्ति  
भेल । ओहि समयमे ओ लोकनि कलक्टर नहि कहाए  
सुपरवाइजर कहयैत छलाह । १७७३ ई०क बादसँ किछु वर्ष  
घरि भारतीमे लोकनि दीवान नामसँ कलक्टरक कार्य करैत  
रहलाह । राजा देवी सिंह पूरियाँक एक एहमे दीवान छलाह ।  
एहि बीच अङ्गरेज लोकनि कतेक प्रकारक शासन सम्बन्धी  
प्रयोग कएलन्हि जाहिसँ प्रजाकेँ बड़ कष्ट भेलक । १७७० ई०मे

पूरियाँमे भयङ्कर अकाल पड़ल जाहिमे लगभग साधा निवासी  
पञ्चत्वकेँ प्राप्त कएल । १७८६ ई०मे जखन लार्ड कार्नवालिस  
भारतवर्षक गवर्नर जनरल भेलाह तँ ई निश्चय भेल जे  
जमीन्दार लोकनिकेँ भूमिस्वामी ( प्रोपराइटर ) बनाए देल  
जाए एवं राजस्व ओसूलीकार स्वाधी रूपेँ हुनके लोकनिक  
हाथमे दए देल जाए । तदनुसार १७९३ ई०मे पूरियाँमे सेहो  
चिरस्थायी प्रवन्ध कएल गेल । एहि व्यवस्थाकेँ लागू करवाक  
समयमे मिस्टर एस० हिटली पूरियाँक कलक्टर तथा मिस्टर  
कोलथुक एसिस्टेंट कलक्टर छलाह । १७९३ ई०मे जेना हम  
पूर्वहि कहि चुकल छी, पूरियाँक रकबा ५००० वर्गमीलसँ  
अधिक छल जाहिमे २००० वर्गमील पर तँ रानी इन्द्रावतीक  
जमीन्दारी छलन्हि जतिक मुख्य हमोड़ी रानीगंजक समीप  
पहसरामे छलन्हि । लगभग २००० वर्गमील पर महाराज  
दरभङ्गाक जमीन्दारी छल तथा लगभग १५० वर्गमील पर  
कनेष्कीक जमीन्दारी छल । सम्पूर्ण धर्मपुर परगना महाराजक  
जमीन्दारीमे गइत छल । सुलतानपुर, हवेली, कटिहार आदि  
परगना रानी इन्द्रावतीक जमीन्दारीमे छल । तीरारवारवह  
तथा असबा बनेलोक जमीन्दारीमे छल । लगभग तीन चौथाइ  
पूरियाँ पर मैसिल जमीन्दार लोकनिक आधिपत्य छल ।

हा० युक्ताननक मत अछि जे ओहि युगमे पूरियाँ जिलाक  
अधिकांश भागमे कालिदास, मनवाच आदिक रचना तथा  
पुराणादि, लोक मैसिली भाषामे सुनैत छलाह जिनका संस्कृतक  
प्रज्ञा नहि छलन्हि । एहि जिलामे मुङ्गेरक भुगुराम मिश्रक



लिखल 'रास-विहार' 'गुदामा चरित' 'शानसीला' आदि ग्रन्थ लोक पढ़ैत छलाह । मनबोध रचित दानसीला तथा हरिदंश जे विशुद्ध मैथिली भाषामे अछि तकर पूर्ण प्रचार छल । गीत गोविन्दक गीत तऽ जेना सभक जिह्वा पर छलैक । डा० बुकाननक मते मनबोध ओ जयदेव दुहु मैथिल ब्राह्मण छलाह । एहि प्रसङ्गमे श्रीमती राजेश्वरी देवीक लेख 'रमानाथ अभिनन्दन ग्रन्थ'मे प्रष्टव्य थिक । दरभङ्गाक महाराज माधव सिंह ओ हुनक उत्तराधिकारिओ लोकनि ह्वाति प्राप्त पण्डित लोकनिके समय-समय पर सम्मानित करैत छलथिन्ह । रानी इन्द्रावती एवं हुनक पति राजा इन्द्र नारायण राय तथा राणा रामचन्द्र नारायण राय आदि विशेष रूपेँ एहि जिलामे मैथिल संस्कृतिक पोषक छलाह । कतेको पण्डित एवं गुणोजन हिनका लोकनिसँ पालित छलाह । उनैसभ एवं बीसम शतकक पूर्वार्द्धमे बनैली परिवार द्वारा मैथिल संस्कृतिक रक्षाक हेतु बहुतो प्रयास कएल गेल । कलिकर्ण दानवीर सोलानन्द सिंह द्वारा गुणोजन सतत सहायत होइत रहलाह । हम भैरव दत्त मल्लिकक नाम आदर भावें लेव जे विरस्थायी प्रबन्ध (Permanent Settlement) केर पूर्व पूर्णियाँक कानूनगोक पद पर प्रतिष्ठित छलाह तथा जमीन्दार सेहो रहथि । कहल जाइत अछि जे ओ अमौरक निवासी छलाह । हिनके बंशमे १७८६ ई०मे हेमन मल्लिक भेल छथि आ' मल्लिकेजी श्री हरिलाल सिंहक धस जा स्टेटक देख-रेख करैत छलथिन्ह । अमौर बनैली राज्यक एक पट्टोक निवासस्थान छल । मानिक नन्दन चौधरी एवं

परमानन्द चौधरी देवानन्द चौधरीक सुपुत्र छलाह । तीसखारदह स्टेट परमानन्द चौधरीक हिस्सामे तथा असजा स्टेट मानिक नन्दन चौधरीक हिस्सामे पड़लैन्हि । वर्तमान बनैली परिवार परमानन्द चौधरीक सन्तान थिकाह । मानिक नन्दनक वंशज पछाति निःसन्तान भए गेलथिन्ह । कहवाक तात्पर्य ई अछि जे पूर्णियाँक एक पैघ भागमे उपर्युक्त श्रीमान् लोकनिक द्वारा भोरंगसँ गङ्गाकात धरि एवं महानन्दासँ वर्तमान कोशीक कात धरि मैथिल संस्कृतिक पोषण भेल ।

वर्तमानयुगमे मालद्वार स्टेटक जमिन्दार लोकनि तथा बनैली एवं श्रीनगरक राजवंश द्वारा मैथिलीक पूर्ण सेवा भेल अछि । राजा कमलानन्द सिंह 'सरोज' राजा कालिकानन्द सिंह, स्व० टंकनाथ चौधरी आदिक द्वारा जे मैथिलीक सेवा भेल अछि से अविस्मरणीय अछि । सम्प्रति कुमार तारानन्द सिंह, कुमार बंछनाथ चौधरी आदिक विनिष्ट सेवा मैथिलीकेँ प्राप्त भए रहल अछि । पं० ब्रजमोहन ठाकुर अधिवक्ता (पूर्णियाँ)क नाम हम सगौरव लेव छी जनिक सत्प्रयासक सभावमे कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिलीकेँ स्थान नहि भेटि सकैत । हमरा लोकनि केँ एखनहुँ मैथिली सँ सम्बद्ध समस्याक समाधान हेतु ठाकुरजीक सत्परामर्श भेटैत रहैत अछि । जहानपुरक स्वर्गीय पं० पुष्पानन्द झा मातृभाषा मैथिलीमे अनेक ग्रन्थक प्रणयन कएलैन्हि । परबहाक पं० माधव मिश्र प्रारम्भहि सँ मैथिलीक प्रगतिक हेतु अग्रगण्य रहलाह अछि । स्वर्गीय पं० शिवानन्द चौधरीक कपाल-कुडलाक मैथिली



अनुवाद पूर्ण प्रसिद्धि प्राप्त कएलक । स्व० कुमार गङ्गानन्द सिंहक मैथिली-सेवा स्तुत्य अछि । हिनक कृति सम्पूर्ण मैथिली-जगतमे प्रसिद्ध अछि । धमदाहा निवासी डा० जगदीशचन्द्र झाक हालहिमे 'सात समुद्रपार' पुस्तक प्रकाशित भेल अछि । से मैथिलीमे यात्रा-विषयक साहित्यक पूर्ति कएलक अछि । डा० झा एकर प्रतिरिक्तो बहुत किछ कार्य मैथिलीक हेतु कएल अछि । डा० विश्वेश्वर मिश्र तथा प्रो० जगदीश मिश्र यद्यपि दरभंगा निवासी यिकाह तथापि हिनका लोकनिक कार्यस्थल ते पूर्णियाँ अछि । ई दुनू मोटे पूर्णियाँ कॉलेजमे मैथिलीक प्राध्यापक छथि तथा अपन विषयक गम्भीर विद्वान छथि एवं मैथिलीक सेवामे सतत तत्पर रहैत छथि । एकर प्रतिरिक्त श्री इन्द्रानन्द मिश्र (वशी पुङ्गवाहा), श्री मुरलीधर सिंह, श्री विभूतिनाथ पाठक, पं० मोदानन्द झा (पंजीकार), पं० राजेन्द्र झा (धमदाहा), श्री कमलप्रानन्द श्रीमती राजेश्वरी देवी (धर्मस्तो पं० विद्यानाथ झा, जिला अभियन्ता, जिला परिषद पूर्णियाँ), पं० उमाकान्त झा 'बधू', श्री देवनाथ राय, श्री उपेन्द्रमिश्र 'नलिन', श्री जगदीश मिश्र 'प्रशान्त', स्व० पं० लक्ष्मीनाथ मिश्र, स्व० कृष्णमोहन झा 'कृष्ण', पं० महावीर झा (रहपुरा), पं० कामेश्वर झा (मुखसेना), पं० वनवदाम मिश्र, श्री भवुकर गंगावर, श्री ब्रह्मानन्द त्रिवेदी, श्री वेंचनाथ चन्द, श्री मेदनी प्रसाद सिंह 'मेदनी', स्व० गोविन्द शुक्ल, श्री योगेन्द्र कलाकार, श्री अमोघ नारायण झा 'अमोघ', श्री अनिरुद्ध झा, श्री कपिलेश्वर झा, श्री कुमुदधारी चौधरी

'पिताक', विद्यालङ्कार श्री उपमानन्द झा (मुखसेना) श्री अमय नाथ मिश्र (कटिहार), पं० निधिनाथ झा, पं० कीर्त्तानन्द राय प्रादि विद्वान मैथिलीक हेतु प्रेरणाक स्रोत रहलाह अछि । धमदाहा निवासी रवीन्द्रजी एक अद्भुत प्रतिभा जए माँ मैथिलीक सेवा कए रहल छथि । साइ सम्पूर्ण मिथिलामे हिनक यशोगान भए रहल अछि । पूर्णियाँ मे विद्यापति-पर्वक अवसर पर यात्रोजी हिनका 'अभिनव विद्यापति'क संज्ञासँ विभूषित कएल ।

पं० शुभकर भाजी, मगर समाहर्ता यद्यपि पूर्णियाँक निवासी नहि छथि, तथापि सरकारी सेवाक प्रसंग ई सात-आठ वर्ष पूर्णियाँ मे विभिन्न पद पर रहलाह अछि । इ स्वयं संस्कृत साहित्यक एक विनिष्ट विद्वान छथि ओ मैथिली मे सेहो छिट-फुट रचना करैत छथि । पूर्णियाँ मे विद्यापति गोष्ठीक जन्म हिनके प्रेरणाक स्वरूप भेल आ' हिनके सत्यवाचक कारणें हमरा लोकनि निश्चित हईं 'विद्यापति पर्व' प्रतिवर्ष मनाए रहल छी । हिनकर 'पूर्णियाँ सम्मना' कविता जकार पाठ १९६६ ई०में मनाओल विद्यापतिपर्वक अवसर पर भेल, समुपस्थित विद्वान द्वारा अत्यन्त प्रशंसित भेल ।

एकर प्रतिरिक्तो अनेकानेक महानुभाव लोकनि मिथिला-मैथिल-मैथिलीक सेवामे संलग्न छथि परन्तु अज्ञानवश हम हुनकालोकनिक उल्लेख नहि कए सकलहुँ अछि ।

—प्राचार्य मदनेश्वर मिश्र